Every Fortnight February I 2017

मूल्य ♦ बारह रुपए

बच्चे

इन बाग-बगीचों का क्या कहना

फूल की कहानी

जादू टूट गया

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

चित्रकथा : ह्वेनसांग

वर्ष- 31 अंक- 14 1-15 फरवरी, 2017 पृष्ठ- 68

बिक्कू

आइसक्रीम और दांत

वेणु वारियथ

वर्ष- 31 अंक-14

फरवरी (प्रथम) 2017, जयपुर

विविध

इन बाग-बगीचों का क्या कहना- 5-11
गुदगुदी- 16-17
बोलें अंग्रेजी- 19
क्रॉसवर्ड/ बूझो तो- 20
खोजबीन- 21
सामान्य ज्ञान- 22-23
बालहंस न्यूज- 24-25
सीख-सुहानी- 26
कविताएं- 43
सैरसपाटा (टोरंटो)- 44-45
तथ्य निराले- 46-47
ऐसा क्यों- 48
नॉलेज बैंक- 49
आर्ट जंक्शन- 50-51
माथापच्ची- 52-53
किड्स क्लब- 54
अंतर बताओ- 55
तंजानियाज बेस्ट केप्ट सीक्रेट- 56-57

कहानी

जादू टूट गया- 12-15

चित्रकथा

ह्वेनसांग (पहला भाग)- 27-42
महाभारत- 62-65

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम-58
ज्ञान प्रतियोगिता-59
रंग दे प्रतियोगिता-60

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

पृष्ठ सज्जा: शेरसिंह
फोटो एडिटिंग: संदीप शर्मा

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3327700
Ext. 50191
e-mail: balhans@epatrika.com

अब बालहंस एक क्लिक पर, log on करें:
balhans.patrika.com

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से बालहंस, जयपुर के नाम भिजवाएं।

वार्षिक- 300/-रुपए
अर्द्धवार्षिक- 150/-रुपए

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिये निम्न फोन नं. पर संपर्क करें-
0141-3327700 Ext. 50352, 50356

फेसबुक पर पढ़िये: www.facebook.com/patrikabalhans

आशा ऐसी मधुमक्खी है, जो बिना फूलों के शहद बनाती है।

संपादकीय

दोस्तो,

किसी को देखकर तुम्हारे चेहरे पर भले ही मुस्कान आये न आये, लेकिन एक खिलते फूल को देखकर अवश्य ही चेहरे पर मुस्कान खिल जाती है। और फूल की बात चलती है तो वसंत की याद आती ही है। ऋतुराज वसंत सारी ऋतुओं में श्रेष्ठ मानी जाती है। इस मौसम में न तो बहुत अधिक सर्दी होती है, और न ही बहुत अधिक गर्मी। चारों ओर की हरियाली के कारण यह हमें ऐसा महसूस कराता है कि पूरी प्रकृति ने स्वयं को हरी चादर से ढक लिया है। सभी पेड़ और पौधे नया जीवन, नया रूप प्राप्त करते हैं, क्योंकि उनकी शाखाओं पर नई पत्तियां और फूल विकसित होते हैं। फसलें खेतों में पूरी तरह से पक जाती हैं। यूं लगता है कि खेतों में सब तरफ सोना बिखरा पड़ा है। आइये इस वसंत का मुस्करा कर, खिलखिला कर स्वागत करें। इस अंक में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग पर एक चित्रात्मक प्रस्तुति है। इस दो भागों में दिया जा रहा है। पहला भाग इस बार।

तुम्हारा बालहंस

इन बाग-बगीचों का क्या कहना

ऋतुराज वसंत दस्तक दे रहा है तो फूल-पौधों, हरियाली की बात तो बनती ही है। चलिये इस मौके पर देश के कुछ प्रसिद्ध बाग-बगीचों की सैर हो जाये।

लोधी गार्डन, दिल्ली

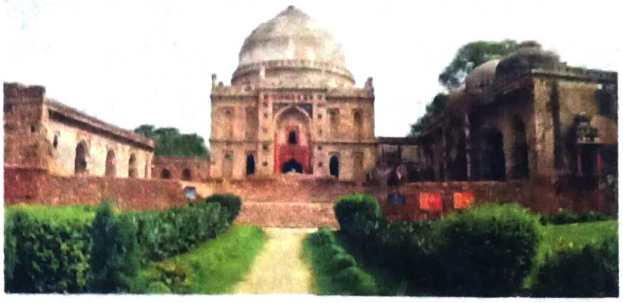

यह दिल्ली का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध बगीचा है। इस गार्डन को सैय्यद और लोधी ने 16वीं शताब्दी में बनवाया था। इस गार्डन में गुजरे दौर की कई सारी कब्रें हैं। इस बगीचे में मोहम्मद शाह की कब्र, सिकंदर लोधी की कब्र, शीश गुंबद हैं। साथ ही यहां 15वीं शताब्दी की वास्तुकला भी देखते बनती है। फिलहाल इस पार्क की देखरेख भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के हाथों में है।

सिम पार्क, कुन्नूर

सिम पार्क तमिलनाडु के हिल स्टेशन कुन्नूर का सबसे बड़ा लैंडमार्क है। यह पार्क 12 हेक्टेयर में फैला है। इसे एक अंग्रेज मेजर मर्रे और मिण्जेण्डी मर्रे सिम ने सन 1874 में बनवाया था। सिम पार्क में 1000 विदेशी पेड़-पौधे हैं। फर्न्स, पाइन्स, मंगोलिया और कामेलिया जैसे पुराने और कम पाए जाने वाले पेड़ आपको यहां दिखेंगे। कुन्नूर का यह प्राकृतिक गार्डन है, जहां पर हर साल फ्रूट शो होता है।

इंडियन बोटेनिकल गार्डन, कोलकाता

यह गार्डन कोलकाता के हावड़ा जिले के शिबपुर में है। यह ऑर्किड पाम, बैम्बूज एंड प्लांट्स ऑफ द पाइन जीनस के लिए प्रसिद्ध है। यह गार्डन हुगली नदी के किनारे 270 एकड़ में बना हुआ है, जहां 1700 अलग-अलग तरह के पेड़-पौधे लगाए गए हैं। बोटेनिकल गार्डन ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा वर्ष 1787 में बढ़ती व्यापारिक गतिविधियों और बाजार को देखते हुए बनाया गया था। यहां का बर्ड हाउस आकर्षण का केंद्र है। इस गार्डन की सबसे बड़ी विशेषता हजारों वर्गमीटर में फैला बरगद का पेड़ है, जो विश्व में सबसे चौड़ा है।

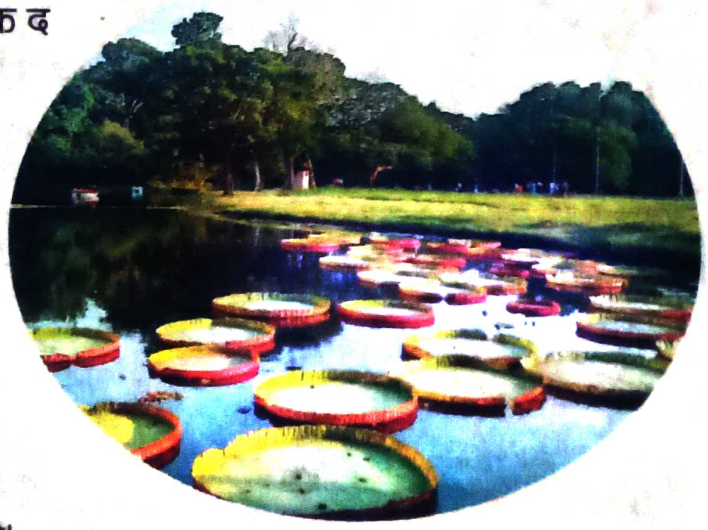

निशात बाग, श्रीनगर

इस गार्डन को मुगल शासकों ने 1633-34 ईस्वी में बनवाया था। यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा बाग है। यह श्रीनगर से 11 किलोमीटर दूर डल झील के पास पूर्वी हिस्से पर बना हुआ है। इस बाग से आप डल झील की खूबसूरती को निहार सकते हैं। इस सीढ़ीदार बाग के एक तरफ झील और दूसरी तरफ हिमालय की चोटी दिखाई पड़ती है। इस गार्डन में भव्य पहाड़ और मुगल मंडप की कलाकारी देखते बनती है।

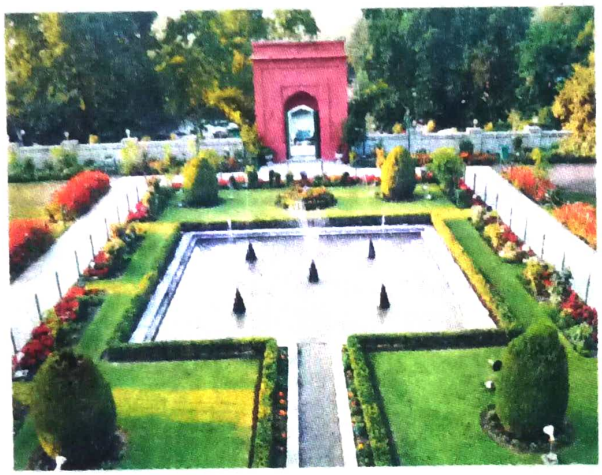

वृन्दावन गार्डन, मैसूर

यह गार्डन इतना बड़ा है कि इसमें 2 मिलियन यानी 20 लाख से भी ज्यादा लोग एक साथ आ सकते हैं। यह मैसूर से 20 किलोमीटर दूर कृष्णराज सागर बांध के नीचे बनाया गया है। यह भारत का सबसे आकर्षक और कर्नाटक का सबसे सुंदर टूरिस्ट प्लेस है। इस गार्डन को कश्मीर के शालीमार गार्डन की तरह मुगल स्टाइल में बनाया गया है। शानदार फव्वारे, फूलों की रंगबिरंगी क्यारियों, और हरी-भरी घास के चलते यह बगीचा बेहद खूबसूरत लगता है। इस गार्डन का खास आकर्षण म्यूजिकल और डांसिंग फाउंटेन हैं।

नेहरू बोटेनिकल गार्डन, गंगटोक

सिक्किम के गंगटोक शहर से 24 किलोमीटर दूर जवाहरलाल नेहरू बोटेनिकल गार्डन वर्ष 1987 में बनाया गया था। इसकी देखरेख वन विभाग करता है। प्राकृतिक सुंदरता और लुप्त होते पेड़ों को देखने के लिए यह जगह अच्छी है। यहां पर आपको वैसे पेड़ों की कई प्रजातियां देखने को मिल सकती हैं, जो अब लुप्त होती जा रही हैं। हिमालय की पर्वत श्रृंखला से पौधों की कई प्रजातियां यहां पर लाकर लगाई गयी हैं। यहां पर आपको 50 से भी अधिक अलग तरह के पेड़ मिल सकते हैं।

बोटेनिकल गार्डन, ऊटी

यह गार्डन वर्ष 1847 में बना था। यह 55 एकड़ एरिया में फैला हुआ है। इस गार्डन में 2000 से भी अधिक विदेशी प्रजाति के पेड़-पौधे हैं। इस गार्डन की देखरेख तमिलनाडु सरकार का हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट करता है। इस गार्डन में अलग-अलग तरह के पेड़-पौधे टूरिस्ट्स के आकर्षण का केंद्र हैं। हर साल मई के महीने में यहां 'समर फेस्टिवल' मनाया जाता है, जो टूरिस्ट्स को बहुत ही पसंद आता है। इस गार्डन का खास आकर्षण फ्लॉवर शो है। इसके अलावा लिली पाउंड और एक कॉर्क पेड़ भी है। कहा जाता है कि यह पेड़ हजारों साल पुराना है।

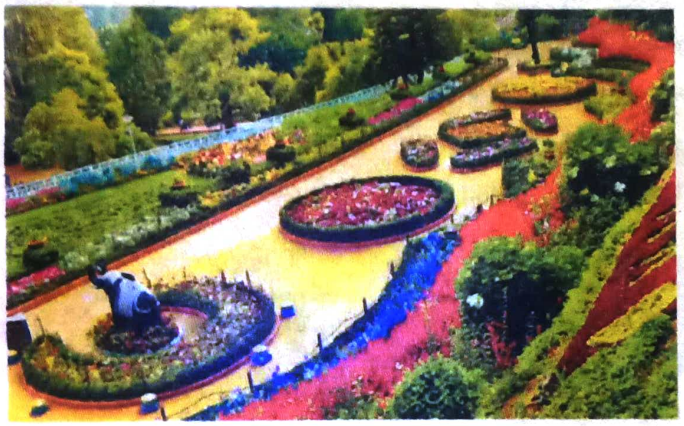

गुलाब बाग, उदयपुर

गुलाब बाग को सज्जन निवास के नाम से भी जाना जाता है। यह उदयपुर का सबसे सुंदर और बड़ा गार्डन है। इसे महाराणा सज्जन सिंह ने 100 एकड़ जमीन पर बनवाया था। यह राजस्थान का सबसे बड़ा गुलाब के फूलों का गार्डन है। यह गार्डन पिछोला लेक के दायीं तरफ स्थित है। अगर आपको प्राकृतिक सुंदरता पसंद है और गुलाब की कई किस्मों से मिलना है तो आप गुलाब गार्डन जा सकते हैं।

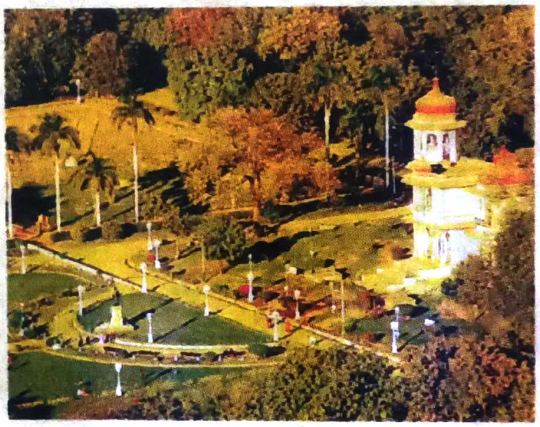

पिंजौर गार्डन, चंडीगढ़

इस गार्डन को स्थानीय लोग यादविन्द्रा गार्डन के नाम से भी जानते हैं। पिंजौर गार्डन में आपको पौराणिक महत्त्व की कुछ चीजें देखने को मिलेंगी। पौराणिक कथा के अनुसार अज्ञातवास के दौरान पांडव इस बगीचे में घूमने के लिए आए थे। यह शहर का फेमस पिकनिक स्पॉट है। साथ ही यहां पर जापानी गार्डन भी देखने लायक है। इस गार्डन में छोटा-सा चिड़ियाघर, नर्सरी और एक सुंदर लॉन है। पिंजौर गार्डन को रात के समय में कलरफुल लाइट से सजाया जाता है। यहां पर टूरिस्ट्स ज्यादातर रात के समय घूमने के लिए आते हैं। इस गार्डन में घूमने के लिए सबसे अच्छा समय अप्रेल से लेकर जून है, क्योंकि इन दिनों यहां पर बैसाखी का त्योहार बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। यहां का मैंगो फेस्टिवल भी बेहद प्रसिद्ध है।

मुगल उद्यान

भारत की राजधानी नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन के पीछे के भाग में स्थित मुगल उद्यान अपने किस्म का अकेला ऐसा उद्यान है, जहां विश्वभर के रंग-बिरंगे फूलों की छटा देखने को मिलती है। यहां विविध प्रकार के फूलों और फलों के पेड़ों का संग्रह है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद ने इस उद्यान को जन-साधारण के दर्शन हेतु खुलवाया था।

इसकी अभिकल्पना ब्रिटिश वास्तुकार सर एडविन लुटियंस ने लेडी हार्डिंग के आदेश पर की थी। तेरह एकड़ में फैले इस उद्यान में ब्रिटिश शैली के संग-संग औपचारिक मुगल शैली का मिश्रण दिखाई देता है। यह उद्यान चार भागों में बंटा हुआ है, और चारों एक-दूसरे से भिन्न एवं अनुपम हैं। यहां कई छोटे-बड़े बगीचे हैं। जैसे पर्ल गार्डन, बटरफ्लाई गार्डन आदि। बटरफ्लाई गार्डन में फूलों के पौधों की बहुत-सी पंक्तियां लगी हुई हैं। यह माना जाता है कि तितलियों को देखने के लिए यह जगह सर्वोत्तम है।

मुगल उद्यान में अनेक प्रकार के फूल देखे जा सकते हैं। जिनमें गुलाब, गेंदा, स्वीट विलियम आदि शामिल हैं। इस बाग में फूलों के साथ-साथ जड़ी-बूटियां और औषधियां भी उगाई जाती हैं। इनके लिये एक अलग भाग बना हुआ है, जिसे औषधि उद्यान कहते हैं। मुगल उद्यान वसंत ऋतु में एक माह के लिये पर्यटकों के लिए खुलता है।

मुख्य उद्यान मुगल गार्डन का सबसे बड़ा भाग है, जिसे पीस द रेजिस्टेंस कहते हैं। यह 200 मीटर लंबा व 175 मीटर चौड़ा है। इसके उत्तर और दक्षिण में टेरेस गार्डन हैं। यहां से दो नहरें उत्तर से दक्षिण व दो नहरें पूर्व से पश्चिम को बहती हैं, जिनके बीच में संगम पर 6 फव्वारे कमल के आकार के बने हुए हैं। ये नहरें बाग को चार भागों में विभाजित करती हैं। यहीं मुगल वास्तु की चार बाग शैली का आभास होता है। इन कमल फव्वारों से 12 फीट की ऊंचाई तक पानी की धार उठती है।

बनावट के आधार पर मुगल गार्डन के चार भाग हैं। चतुर्भुज आकार का यह उद्यान मुख्य भवन से सटा हुआ है। इसे चार भागों में बांटा गया है। उद्यान के मध्य भाग में राष्ट्रपति द्वारा स्वागत समारोहों और प्रीति भोजों का आयोजन किया जाता है। यह कुछ-कुछ मुगल स्थापत्य के चार बाग शैली का आभास देता है।

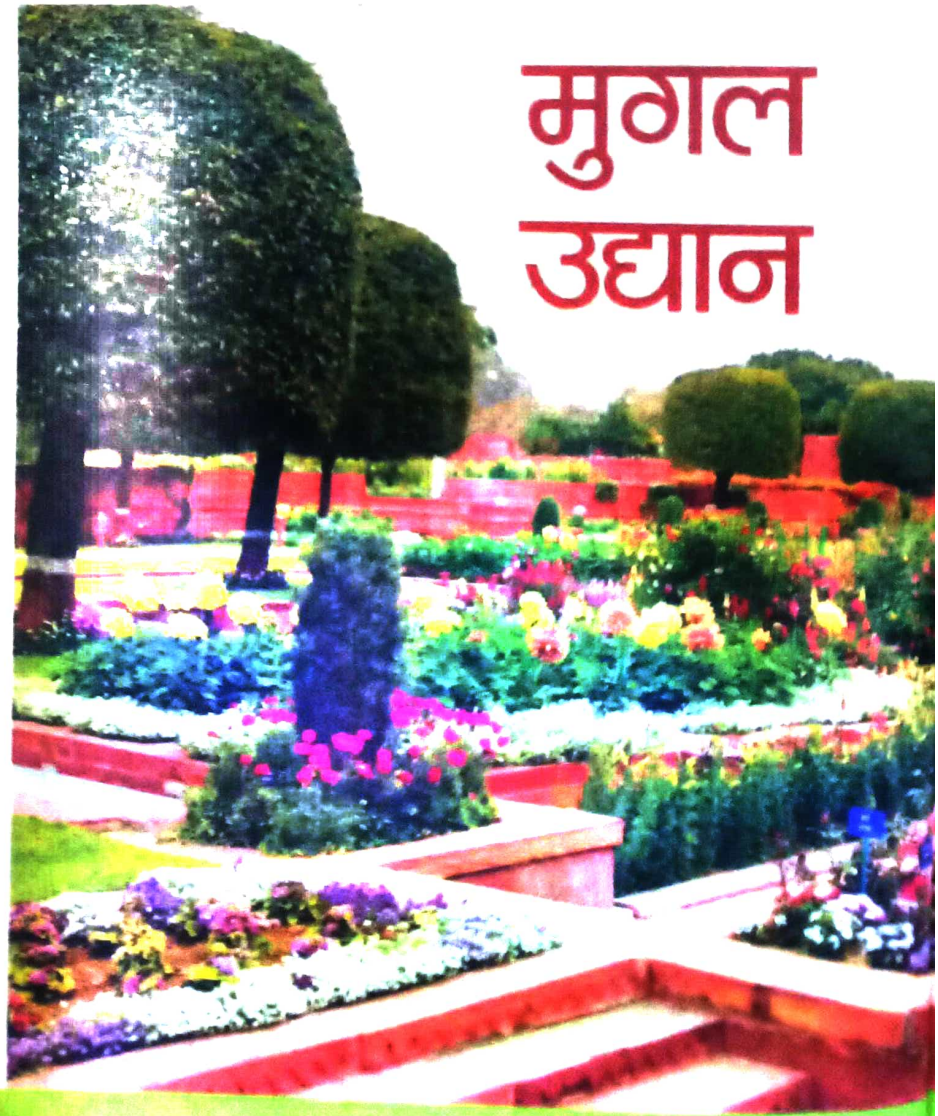

यहां से होकर वृत्ताकार उद्यान के लिए रास्ता जाता है। लम्बे उद्यान में गुलाबों के लम्बे-लम्बे गलियारे हैं, जिनमें तराशी गई छोटी-छोटी छतरीनुमा झाड़ियां हैं, जो देखने में ऐसी प्रतीत होती हैं, जैसे एक खूबसूरत रंगीन विशाल गलीचा बिछा हो। वृत्ताकार उद्यान को पर्ल गार्डन या बटरफ्लाई गार्डन भी कहा जाता है। रंगों की छटा बिखेरते इस उद्यान में बीच-बीच में हरित पट्टियां हैं, और इसके मध्य में एक फव्वारा भी है।

पर्दा गार्डन ऊंची-ऊंची दीवारों से घिरे मुख्य उद्यान के पश्चिम में है। इसमें छोटी-छोटी तराशी गई झाड़ियों से घिरे गुलाबों के वर्गाकार उद्यान हैं। इसके दीवारों के किनारे-किनारे खूबसूरत चाइना ऑरेंज के वृक्ष हैं। फलों के मौसम में इन वृक्षों पर आभूषणों जैसे नजर आते फलों की संख्या पत्तियों से कहीं ज्यादा हो जाती है।

वृत्ताकार उद्यान पश्चिमी किनारे पर स्थित है। इसमें सालभर खिलते रहने वाले अनेक प्रजाति के फूलदार पौधे हैं। इस उद्यान के मध्य में स्थित फव्वारा इसकी खूबसूरती में चार चांद लगा देता है। यहां लगे संगीतमय फव्वारों में रोमांचक फव्वारों के ऐसे जोड़े हैं, जिनसे शहनाई का संगीत और वन्दे मातरम की धुन निकलती है। साथ ही ये फव्वारे संगीत के साथ उतरते और चढ़ते हैं।

मुगल शैली में विकसित किया गया यह उद्यान छह हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है। उद्यान को राष्ट्रपति भवन के पिछवाड़े इसलिए रखा गया है, क्योंकि मुगलों के बाग-बगीचे महल के पीछे ही हुआ करते थे। इसलिए एडवर्ड लुटियन्स ने केवल इसका रूपांकन ही नहीं किया, बल्कि मुगलों की सोच को भी उसी तरह बनाये रखा।

वर्ष 1911 में जब अंग्रेजों ने तय किया कि राजधानी कलकत्ता से दिल्ली ले आएं तो उन्होंने दिल्ली डिजाइन करने के लिए प्रसिद्ध अंग्रेज वास्तुकार एडवर्ड लुटियन्स को इंग्लैंड से भारत बुलाया। उन्होंने दिल्ली आकर वायसराय हाउस के लिए रायसीना की पहाड़ी का चयन किया। उसे काटकर वायसराय हाउस (जिसे अब राष्ट्रपति भवन कहते हैं), का जो नक्शा तैयार किया उसमें भवन के साथ-साथ बाग-बगीचा तो था, लेकिन वह ब्रिटिश शैली के थे।

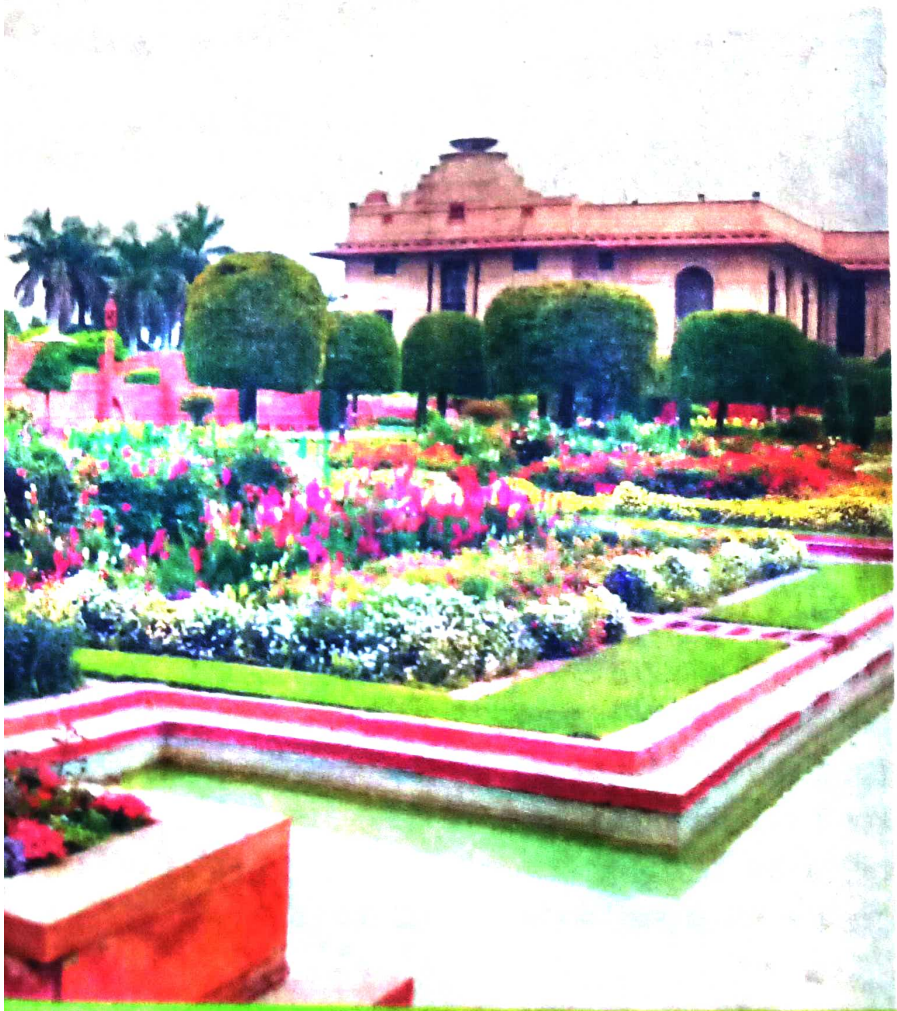

शेष पृष्ठ 10-11 पर

फखरूद्दीन अली अहमद को कोई खास दिलचस्पी इस बाग में नहीं थी, लेकिन बेगम आबिदा को यह गार्डन बहुत भाया। वे घंटों इस बाग में फूलों को निहारतीं, उनसे बातें किया करतीं और घूम-घूम कर

प्रत्येक क्यारी में जाकर उनकी देखभाल करती थीं। इकेबाना उन्हीं की वजह से इस बाग की शोभा बढ़ा रहा है।

डा. शंकर दयाल शर्मा को फूलों से अधिक उनकी खुशबू से प्यार था। उन्होंने बाग में अनेक खुशबूदार फूलों को लगाने पर जोर दिया था। चम्पा, चमेली, हरसिंगार जैसे ठेठ भारतीय फूल इसी दौरान इस बाग में लगाए गए। के.आर. नारायणन को भी फूलों से ज्यादा लगाव नहीं था, फिर भी वे कभी-कभार बाग में टहलने जरूर जाते थे और फूलों को बड़े गौर से निहारते थे। उन्हें फूलों की खुशबू बहुत अच्छी लगती थी।

डा.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम वैज्ञानिक के साथ-साथ प्रकृति-प्रेमी भी रहे हैं। उन्हें इस बाग के बोन्साई पेड़ बहुत अच्छे लगते थे। वे लगभग प्रतिदिन इस बाग में सैर करने आते थे। उन्हें फूलों से भी बहुत लगाव रहा। वे चाहते थे कि इस उद्यान का कोना-कोना ऐसा हो, जहां कोई न कोई फूल महक रहा हो।

मुगल उद्यान में मोने नट व ओकलाहोमा सहित अकेले गुलाब की ही 250 से भी अधिक किस्में हैं। ओकलाहोमा गुलाब के फूल का रंग लगभग काला है। नीले गुलाब की प्रजातियों में पैराडाइज, ब्ल्यू मून और लेडी एक्स शामिल हैं। यहां हरे रंग के गुलाब की भी किस्में हैं।

मॉलश्री, पुत्रंजीव, सरू, जुनिपर, चाइना औरेंज जैसे वृक्षों से हमेशा हरे-भरे रहने वाले इस उद्यान में कई प्रकार के दुर्लभ फूलों की बहार देखने को मिलती हैं। गुलदाऊदी की 125, बॉगनविलिया की 50 से अधिक किस्मों को यहां देखा सकता है। गेंदे की जितनी किस्में यहां हैं, शायद ही और कहीं देखने को मिलती हों। डहेलिया के पेड़ों की भी अलग ही छटा है।

इनके अलावा यहां बोनसाई का भी प्रयोग किया गया है। कुछ तो ऐसे भी हैं, जिनकी आयु 50-60 वर्ष से भी अधिक है। यहां कैलेन्डुला एन्टिरहिनम, एलिसम, डिमोरफोथेका, एसोलझिया, लार्क्सपर, गजेनियां, गेरबेरा, गोडेतिया, लाइनेरिया, मेसमब्राइन्थेमम, ब्रासिकम, मेतुसेरिया, वेरबेना, विओला, पैन्सी, स्टॉक, डहेलिया, कारनेशन और स्वीटपी जैसे सर्दियों में खिलने वाले फूलों की भी बहुतायत है।

जादू टूट गया

रूस के एक गांव में आठ साल का मीशा अपने माता-पिता के साथ रहता था। एक बार सरहद पर युद्ध छिड़ गया। मीशा के पिता को खेतीबाड़ी का काम छोड़ कर युद्ध के लिये सेना के साथ सरहद पर जाना पड़ा। जाते हुए उन्होंने मीशा से वादा किया कि वे दुश्मनों के छक्के छुड़ा कर जल्दी ही युद्ध से लौट आयेंगे और अपने मीशा के साथ खेलेंगे-कूदेंगे भी।

जब मीशा के पिता युद्ध लड़ने चले गये तो पीछे से वह अपनी मां का खेत के काम-काज में अपना हाथ बंटाने की कोशिश करने लगा। मां उसकी अपनी मदद करने की कोशिशों पर रीझ जाती।

'बस, रहने दे बेटा। तू अभी ठहरा नन्हीं जान, तुम्हें तो बस खेलना-कूदना चाहिये। जब चार-पांच साल बड़े हो जाओ, तब मेरी मदद जरूर करना।' मां उसे हंसते हुए समझाती तो मीशा हंसता-मुस्कराता खेलकूद में खो जाता।

एक दिन खेत पर खेलते-खेलते मीशा को बहुत जोरों की प्यास लगी। उसने मां से पानी मांगा।

मां ने कहा, 'अरे, पानी तो मैं आज साथ लाना ही भूल गयी। चलो, घर चलते हैं। वहां कुएं से पानी निकाल कर तुम्हें पिलाती हूं।' इतना कह कर मां मीशा को साथ ले कर घर की तरफ चल दी।

रास्ते में मीशा को पानी से भरा एक गड्ढा दिखा तो वह खुश होता हुआ पानी पीने जैसे ही आगे बढ़ा कि उसकी मां ने उसे रोक दिया।

'नहीं बेटा, इस गड्ढे का पानी मत पीना। यह पानी यहां की जादूगरनी ने अपने जादू से जादुई बना रखा है। जो भी इस पानी को पीयेगा, वह भेड़ बन जायेगा।' यह सुन मीशा ने उस गड्ढे का पानी नहीं पीया। लेकिन घर था कोसों दूर, और प्यास जोरों की लग आयी थी। आगे जब दूसरा गड्ढा आया तो मीशा अपनेआप को रोक नहीं पाया और तुरंत गड्ढे के आगे झुक कर उसने अपनी प्यास बुझा ली। लेकिन तभी चमत्कार हुआ। देखते ही देखते मीशा एक सफेद भेड़ में बदल गया।

'अरे नहीं!' बेचारी मीशा की मां के यह देखते ही आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी। लेकिन वह बेचारी अब कर भी क्या कर सकती थी। भेड़ बने मीशा को वह सीने से लगाये, रोती हुई घर लौट आयी। एक तो उसके पति की सरहद से कोई खबर नहीं आयी, और दूसरे अपने बेटे के भेड़ बन जाने से मीशा की मां दिन-रात दुखी रहने लगी। घर के काम-काज के साथ उसे मीशा पर घण्टों नजर लगाये रखनी पड़ती थी, ताकि वह कहीं इधर-उधर न हो जाये, अथवा कोई बड़ा जानवर या पंछी उसे उठा न ले जाये।

एक दिन उस इलाके की जादूगरनी कौआ बन कर अपने जादुई पानी से बने भेड़-बकरियों की तलाश में निकली। संयोग से भेड़ बना मीशा अपनी मां से नजर बचा कर बाहर कई दिनों बाद खिली धूप में जैसे ही खेलने निकला कि कौआ बनी जादूगरनी की नजर उस पर पड़ गयी।

(शेष पृष्ठ 14-15 पर...)

(पृष्ठ संख्या 13 से आगे...)

जादूगरनी तुरंत अपने असली रूप में आकर भेड़ बने मीशा को लेकर अपने घर की तरफ उड़ चली। बेचारा मीशा मां-मां कहता ही रह गया। जादूगरनी अपने घर पर दिन में मीशा को भेड़ से इंसान बना कर उससे घर के तरह-तरह के काम करवाती और रात होते ही उसे फिर से भेड़ बना कर दरवाजे से बांध देती।

एक दिन जब भोजन के लिये कोई शिकार पकड़ने जादूगरनी पास के जंगल गयी हुई थी तो भेड़ बने मीशा को पास की दीवार के बिल से आवाज आयी, 'मीशा, मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूं। उस जादूगरनी द्वारा किये जा रहे अत्याचार मुझसे देखे नहीं जाते।' मीशा ने हैरानी से बिल की तरफ देखा। वहां एक सफेद रंग का चूहा बैठा था।

'सुनो मीशा! यह जादूगरनी बड़ी दुष्ट है। इसका इरादा तुम से जी भर जाने के बाद तुम्हें खाने का है। मैं तुम्हारी रस्सी काट देता हूं। तुम फुर्ती से यहां से भाग खड़े हो...। साथ ही मैं तुम्हें यह भी बताता हूं कि इस दुष्ट जादूगरनी का अंत कैसे हो सकता है।' कहते हुए चूहे ने जैसे ही मीशा की रस्सी काटी कि मीशा चूहे को धन्यवाद देते हुए बंदूक से निकली गोली की तरह वहां से छूट चला।

उधर बेचारी मीशा की मां का भेड़ बने मीशा के घर से गायब हो जाने के बाद रोटी-पानी छूटता चला गया। वह बेचारी 'मीशा-मीशा' पुकारती अपने घर के आस-पास मीशा को तलाशती रहती।

जब मीशा जादूगरनी के घर से भाग कर अपने घर पहुंचा तो उसने देखा कि घर के बाहर उसकी मां जमीन पर बेहोश पड़ी है। कई दिनों तक भूखा-प्यासा रहने के कारण मीशा की मां बेहोश हो गयी थी।

बेचारा मीशा! अपनी मां को होश में लाने के लिये पानी भी नहीं ला सकता था। बेबस हो कर अपनी मां की दयनीय दशा देख उसकी आंखों से आंसू टपकने लगे।

मीशा की आंखों से टपकते हुए आंसू जब मीशा की मां की आंखों पर पड़े तो वह तुरंत होश में आ गयी और भेड़ बने मीशा को अपने पास पा कर खुशी से झूम उठी।

'ओ मेरे प्यारे मीशा, तुम मुझे छोड़ कर कहां चले गये थे?' मां ने भेड़ बने मीशा को चूमते हुए कहा तो मीशा ने सारी आपबीती उसे कह सुनाई।

संयोग से युद्ध समाप्त हो चुका था और मीशा के पिता घर लौट आये थे। जब मीशा की मां ने मीशा के जादू से भेड़ हो जाने और जादूगरनी द्वारा उसे उठा कर ले जाने की बात सुनाई तो मीशा के पिता आगबबूला हो कर बोले, 'मैं अभी अपने घोड़े पर सवार हो कर उस जादूगरनी की खोज में निकलता हूं।

जैसे ही वह जादूगरनी मेरे हाथ लगेगी, मैं उसका काम तमाम कर दूंगा।' लेकिन मीशा की मां ने उन्हें समझाते हुए कहा कि जादूगरनी मीशा की तलाश में फिर से जरूर आयेगी। आप घात लगाकर बैठ जाये। जैसे ही जादूगरनी आप को नजर आये, आप उसका काम तमाम कर दें। मीशा के पिता को अपनी पत्नी की बात जंच गई।

मीशा की मां की बात सच निकली। थोड़ी ही देर बाद कौआ बनी जादूगरनी मीशा को लेने आ धमकी। जैसे ही उसने भेड़ बने मीशा को अकेले पाया तो अपने असली रूप में उसे उठाकर भागने लगी कि मीशा के पिता ने उस पर तीर चला दिया।

तीर ठीक उसके सिर के बीच में से हो कर निकल गया। जादूगरनी की मौत का यह राज सफेद चूहे ने मीशा को बताया था और मीशा ने अपने पिता को बताया।

तीर लगते ही जादूगरनी पलक झपकते ही राख के ढेर में बदल गयी। जादूगरनी के मरते ही उसका जादू भी आखिर में टूट ही गया और मीशा भेड़ से फिर इंसान बन गया। मीशा के माता-पिता ने आगे बढ़कर उसे गले से लगाकर चूम लिया। सारे इलाके के जादुई पानी से भरे गड्ढे गायब हो गये। अब कोई भी जादुई पानी पी कर जानवर नहीं बन सकता था।

-शैलेन्द्र सरस्वती

टीचर- ऐसा कोई उदाहरण बताओ, जो साबित करे कि गर्मी से चीजें फैलती हैं और ठंड में सिकुड़ती हैं।
पप्पू- गर्मियों में दिन बड़े होते हैं और सर्दियों में छोटे।

चिंटू को हाथों पर चलकर घर में घुसते देखकर पिताजी बोले- बेवकूफ, यह क्या कर रहा है?
चिंटू- आपकी आज्ञा का पालन कर रहा हूं पापा। आपने कहा था न कि अगर फेल हो जाए तो घर में कदम नहीं रखना।

मोटू- दुनिया में कैसे-कैसे 420 लोग मरे पड़े हैं।
पतलू- क्यों क्या हुआ?
मोटू- आज सवेरे दूधवाला मुझे खोटी अठन्नी दे गया।
पतलू- कहां है वह अठन्नी?
मोटू- वह तो मैंने सब्जीवाले को देकर सब्जी खरीद ली।

सेल्समैन-सर कॉकरोच के लिए पाउडर लेंगे।
गप्पू- नहीं, हम कॉकरोच को लाड़-प्यार नहीं देते। आज पाउडर लगा दूंगा तो कल बॉडी स्प्रे मांगेगा।

मां-बेटा तुम्हारे ऑफिस में काम कैसा चल रहा है?
बेटा- मेरे नीचे 25 आदमी काम करते हैं।
मां- तो क्या तू अभी से अफसर हो गया?
बेटा- मां मेरा ऑफिस ऊपर की मंजिल में है। नीचे के फ्लोर पर 25 आदमी काम करते हैं।

रामू का बेटा स्कूल जाते हुए रो रहा था।
रामू- शेर के बच्चे रोते नहीं हैं।
बेटा- शेर के बच्चे स्कूल भी नहीं जाते।

सोहन- कल मुझे पता लगा कि मेरे शरीर में बिल्कुल भी आयरन नहीं है।
मोहन- तुझे कैसे पता चला?
सोहन- मैंने चुम्बक लगा कर देखा था, चिपका ही नहीं।

गुदगुदी

टीचर- मैं जो भी सवाल करूं, उसका जवाब फटाफट देना।
संजू- जी सर।
टीचर- भारत की राजधानी बताओ?
संजू- फटाफट।

भिखारी- भगवान के लिए कुछ खाने को मिलेगा।
पप्पू- मम्मी इसे कुछ भी खाने के लिए मत देना, यह भगवान के लिए मांगता है और खुद खा जाता है।

पापा- तुम रो क्यों रहे हो?
पप्पू- मेरे मास्टर जी बहुत बीमार थे।
पापा- तो इसमें रोने की क्या बात है?
पप्पू- अब वह ठीक हो गए हैं, कल से स्कूल आने वाले हैं।

मोहन- तुम किसी भी काम से जाते हो, तो 2-3 घंटे तक वापस ही नहीं आते?
नौकर- साहब, आपने ही तो कहा था कि बिजली की तरह जाओ और बिजली की तरह आओ।

कंजूस, दुकानदार से-ऐसा साबुन दो, जो घिसे कम और लगाते ही चेहरा गुलाब-सा लाल हो जाए।
दुकानदार-यह लो ईंट।

दसवीं पास करके लगा कि बहुत पढ़ लिया। लेकिन अब पता चला कि दसवीं की मार्कशीट तो सिर्फ जन्म-तारीख के काम आती है।

टीचर (पप्पू से)- कॉपी छुपा लो, पीछे वाला देख रहा है।
पप्पू- देखने दो सर, मैं अकेला क्लास में फेल नहीं होना चाहता।

पप्पू- यार, लग रहा है कि मुझे बर्ड फ्लू हो गया है।
चम्पू- तुझे कैसे पता?
पप्पू- मेरा कल से उड़ने का मन कर रहा है।

छगन- डॉक्टर ने कहा था कि वह दो हफ्तों में मुझे पैरों पर खड़ा कर देगा।
मगन-अच्छा, क्या वह ऐसा कर पाया?
छगन- हां, उसका बिल चुकाने के लिए मुझे मेरी कार जो बेचनी पड़ी है।

चम्पू- इंडियन फिल्म इंडस्ट्री में सबसे पहला किसका ई-मेल आईडी था?
पप्पू- नहीं पता?
चम्पू- शम्मी कपूर का, क्योंकि उन्होंने ही सबसे पहले बोला याहू....।

मगन एक बार डबल डेकर बस में चढ़ गया। कंडक्टर ने उसे ऊपर भेज दिया।
मगन- थोड़ी ही देर में भागता हुआ वापस आया और बोला, 'मरवाएगा क्या, ऊपर तो ड्राइवर ही नहीं है।'

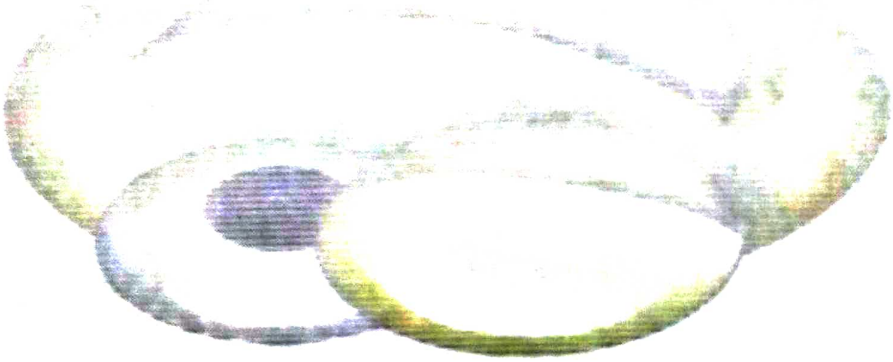

एक लड़की ने दुकान में जाकर पिज्जा ऑर्डर किया।
वेटर- मैडम, इसके 4 पीस करूं या 8 पीस?
लड़की- 4 पीस ही कर दो।
8 खाऊंगी तो मोटी हो जाऊंगी।

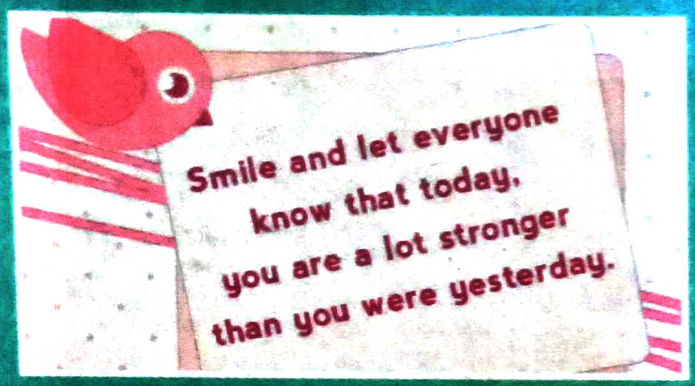

You can let your smile change people, but don't let people change your smile.

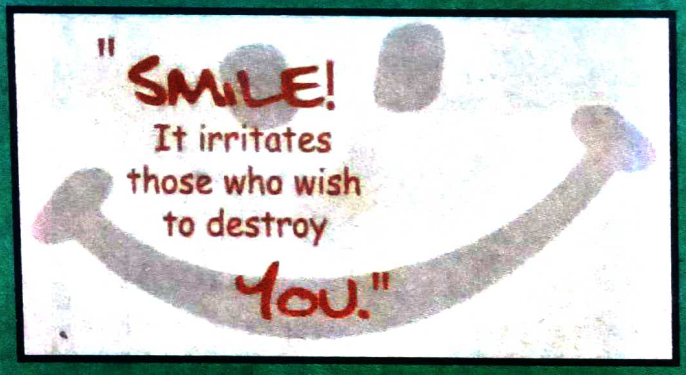

Quotes

make a smile your *signature* accessory

A **smile** should be shared with everybody.

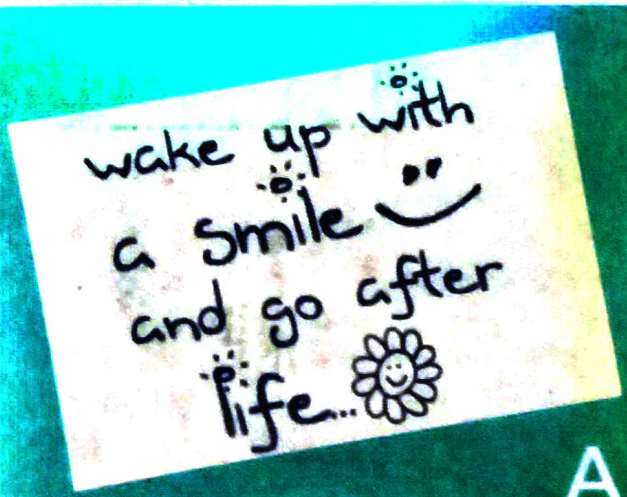

A smile can mean a thousand words, but it can also hide a thousand problems.

1. इन डिजाइनर फ्रेम की क्या कीमत है?
How much are these designer frames?
हाऊ मच आर दीज डिजायनर फ्रेम्स?
2. मेरी आंखों की दृष्टि और खराब हो रही है।
My eyesight is getting worse.
माय आईसाइट इज गेटिंग वर्स।
3. क्या आप कॉन्टेक्ट लेंस पहनते हैं?
Do you wear contact lens?
डू यू वियर कॉटेक्ट लेंस?
4. आपको पास का देखने में तकलीफ है या दूर का देखने में?
Are you short-sighted or long-sighted?
आर यू शॉर्ट-साइटेट ओर लोंग-साइटेड?
5. क्या आप फलक पर लिखे हुए अक्षरों को पढ़ सकते हैं। ऊपर से शुरू करते हुए?
Could you read out the letters on the chart, starting at the top?
कुड यू रीड आउट द लेटर्स ऑन द चार्ट, स्टार्टिंग एट द टॉप?
6. क्या आप अपनी बायीं आंख बंद करके अपनी दायीं आंख से पढ़ सकते हैं?
Could you close your left eye and read this with your right?
कुड यू क्लोज योअर लेफ्ट आई एंड रीड दिस विद योअर राइट?
7. क्या आप सुनने की जांच करते हैं?
Do you do hearing tests?
डू यू डू हिअरिंग टेस्ट्स?
8. आपने यहां कितने समय काम किया है?
How long have you worked here?
हाऊ लोंग हैव यू वर्क्ड हियर?
9. मैं भोजन करने बाहर जा रहा रहा हूं।
I'm going out for lunch.
आ'म गोइंग आउट फॉर लंच।
10. मैं डेढ़ बजे तक वापस आऊंगा।
I'll be back at 1.30 P.M.
आइ'ल बी बैक एट 1.30 पी. एम.

बच्चो, तुम्हें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तुम्हारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तुम्हें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वाक्य दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और अभ्यास करें।

बोलें अंग्रेजी
Lesson- 270
Spoken English Practice

English-Hindi Phrases

In theory- सिद्धान्त रूप में।
In view of- को ध्यान में रखते हुए।
Resume of the case- मामले का सार।
In the same way- उसी भांति, उसी तरह।
Respectfully beg to say- सादर निवेदन है।

Antonyms

Exclude- अलग करना	Include- शामिल करना
Exit- बाहर	Entrance- प्रवेश
Expand- विस्तार	Contract- सिकुड़ना
Explicit- स्पष्ट	Implicit- अस्पष्ट

IDIOM

Eat, Sleep And Breathe Something-
Meaning- Being so enthusiastic and passionate about somehting that you think about it all the time.
Instance- My son has recently learnt cycling. He eats, sleeps and breathes it now.

Synonyms

Tell- Disclose, Reveal, Relate, Narrate, Inform, Advise, Explain, Divulge, Declare, Command, Order, Bid.

Word Power

Trodden
कुचला हुआ

Aptness
उपयुक्तता

Authenticity
प्रामाणिकता

Broth
रसा, सूप

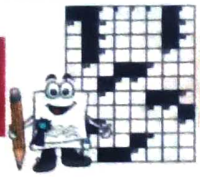

Crossword Puzzles

देवांशु वत्स

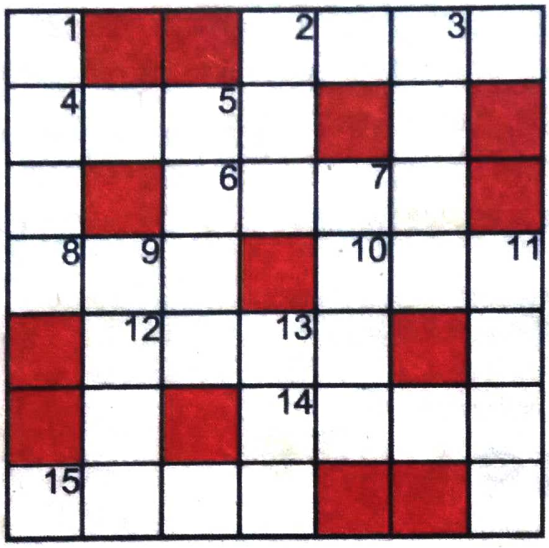

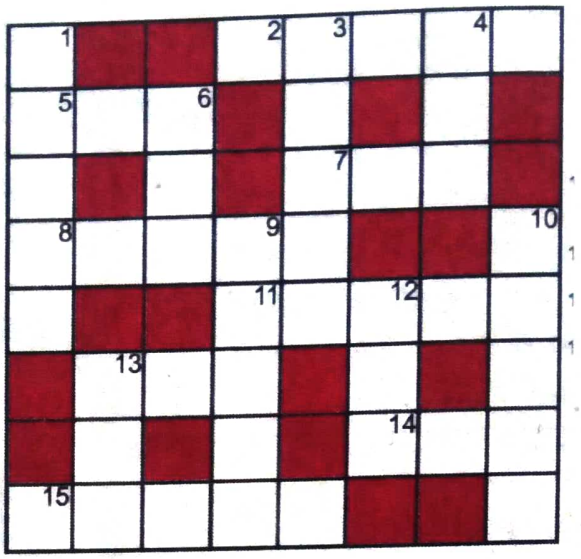

बाएं से दाएं

1. पुरखों से मिली वस्तु, धन आदि (4)।
4. जो मन में या मन की कल्पना से उत्पन्न हो (4)।
6. महीन सूत से बुना सफेद और पतला कपड़ा (4)।
8. फिसलन या उतार को यह भी कहेंगे (3)।
10. पुलिस किसी को गिरफ्तार कर यहां रखती है (3)।
12. लगातार टन-टन की आवाज (4)।
14. मृत और घायल (4)।
15. टालमटोल (4)।

ऊपर से नीचे

1. संग्रह, समूह, मिलान, संक्षेप (4)।
2. व्याकुल (3)।
3. पंजाब की एक प्रमुख नदी (4)।
5. संकुचित होना, सिकुड़ना (4)।
7. महान होने का भाव (4)।
9. उठाकर जमीन पर दे मारना (4)।
11. तड़-तड़ की आवाज (4)।
13. वृक्ष की शाखा (3)।

ACROSS

2. An extinct Italic language of ancient southern Italy (5).
5. A blow that renders the opponent unconscious (3).
7. A kind of person (3).
8. Write as if with print, not cursive (5).
11. The independent state that the Tamil Tigers have fought for (5).
13. A healthy capacity for vigorous activity (3).
14. Become friends, Act friendly towards (3).
15. Take without the owner's consent (5).

DOWN

1. Make a telephone call over the internet, especially using the software called Skype (5).
3. Feeling a need to see others suffer (5).
4. Consider obligatory, request and expect (3).
6. India's largest bank (3).
9. A valley in southeastern Greece, where the Nemean Games were held (5).
10.Present in great quantity (5).
12. The upper side of the thighs of a seated person (3).
13. A large open vessel for holding liquids (3).

हल

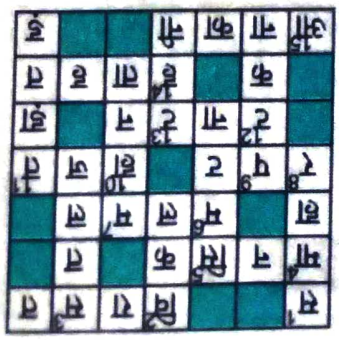

Answer

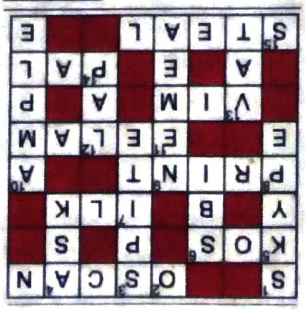

खोज-बीन

कुं	म	रे	अ	न	रे	श	मे	ह	ता
गि	व	ज	न	शो	ण	र	गि	प	सु
रि	शि	र	रे	ल	क	नू	रि	ब	रें
जा	प्र	व	ना	भा	ड़ा	वा	रा	व	द्र
कु	रे	बि	प्र	रा	घा	का	ज	अं	व
मा	प	ष्णु	ह	सा	य	भा	कि	पे	र्मा
र	वि	प्र	ता	बे	द	ण	शो	ड	यी
मा	ख	ल	भ	का	रे	सिं	र	की	सां
थु	के	दा	र	ना	थ	सिं	ह	र	ची
र	अ	ली	ला	ध	र	ज	गू	ड़ी	द

कैसे हल करें

इस ग्रिड में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित 10 साहित्यकारों के नाम दिये गये हैं।

मं	ला	ग	श्री	कां	त	या	दे	व	टी
घ	झ	अ	घ	लू	च	क	ज	बे	ग
म	कृ	ली	ह	पे	वी	रि	की	ब	व
सु	चं	दं	ब	दी	ड़ा	ण	त्र	ता	र
आ	रे	ज	दी	ह	हम	का	णी	ही	झू
र	खि	ड़ी	न	ब्रा	न	रि	ढ	जा	न
श	ब	री	स	या	प	रा	तू	ड	गृ
स	फ	दा	स	दे	वि	रू	ये	की	ह
अ	व	भा	बिं	वा	त	धा	आ	उ	दा
दे	ज	ग	उ	थ	ल	श	न	री	ह

कैसे हल करें

इस ग्रिड में शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की 10 कृतियों के नाम दिये गये हैं।

हल

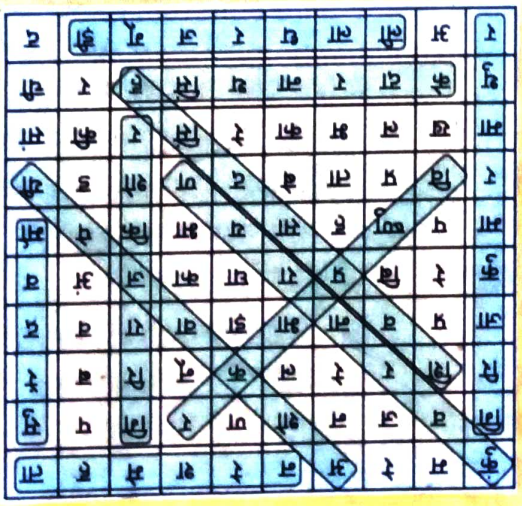

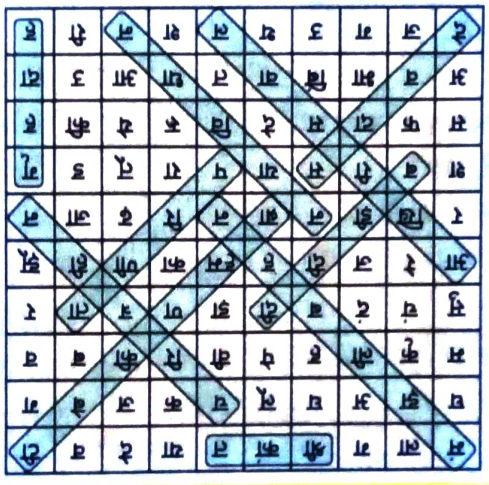

बूझो तो...!

1. एक पहेली सुनो मैं कहूं
तू सुन ले ओ मेरे पूत।
बिना पंखों के उड़ गई
बांध गले में वह सूत।

2. बिन पांवों के चलते देखा
इत उत उसको फिरते देखा।
काम विचित्र करते देखा
जल से उसे मरते देखा।

3. दिन में देता नहीं वह दिखाई
मैं निशिचर हूं कहलाता।
धरती के हर प्राणी का
मैं मामा कहलाया जाता।

4. देश-विदेश में जहां भी चाहूं
बिना पैर मैं चल पड़ता हूं।
जहां कहीं भी जाना मैं चाहूं
बिना यान मैं उड़ जाता हूं।

5. एक बूढ़े के बारह बच्चे
कोई छोटे तो कोई लम्बे।
कोई गरम और कोई ठंडे
बतलाओ नहीं खाओ डंडे।

6. अगर धूल-कचरे
से बचना चाहो।
मुझे पकड़ो घुमाओ
सब स्पष्ट पाओ।

उत्तर

1. पतंग
2. जूता
3. पखवा
4. नाव
5. वर्ष
6. झाड़ू

राष्ट्रपति भवन

राष्ट्रपति भवन भारत सरकार के राष्ट्रपति का सरकारी आवास है। इस भव्य भवन की खूबसूरती देखते ही बनती है। आइए जानें, राष्ट्रपति भवन से जुड़ी रोचक जानकारियां-

- हमारे देश का राष्ट्रपति भवन 320 एकड़ में फैला हुआ है।
- यह विश्व के सबसे बड़े राष्ट्राध्यक्ष आवासों में गिना जाता है।
- वर्ष 1950 तक इसे वायसराय हाउस बोला जाता था। तब यह तत्कालीन भारत के गवर्नर जनरल का आवास हुआ करता था।
- इसका निर्माण सन् 1912 में शुरू हुआ और 1929 में पूर्ण हुआ। इसे बनाने में कुल 17 साल लगे।
- इस भवन में 300 से ज्यादा कक्ष हैं।
- ब्रिटिश वास्तुकार सर एडविन लैंडसियर लुटियन्स, जो कि नगर योजना के प्रमुख सदस्य थे। उन्हें इस इमारत की अभिकल्पना का श्रेय जाता है।
- इसे बनाने में 700 मिलियन ईंटें और 3 मिलियन क्यूबिक फीट पत्थर लगा।
- यह भारत की सबसे बड़ी आवासीय इमारत है।
- यहां के मुगल उद्यान के गुलाब बाग में अनेक प्रकार के गुलाब लगे हैं। यह जन साधारण के लिए प्रति वर्ष फरवरी माह में खोला जाता है।
- इस भवन में प्रत्येक शनिवार को सुबह 10 बजे से 30 मिनट तक चलने वाला, चेंज ऑफ गार्ड सेरेमनी का आयोजित किया जाता है।
- इसे बनाने में करीब 29,000 लोगों को लगाया गया था।
- यहां बच्चों के लिए दो गैलेरियां हैं।
- राष्ट्रपति भवन में स्टाफ की संख्या 750 है।
- दरबार हॉल के पीछे बुद्ध की एक विशाल मूर्ति लगी है। इसे इंडिया गेट जितने ऊंचे चबूतरे पर स्थापित किया गया है।
- राष्ट्रपति भवन के गिफ्ट म्यूजियम में किंग जॉर्ज पंचम की चांदी की कुर्सी रखी है। जिसका वजन 640 किलोग्राम है। वहां एक सूखा हुआ पुष्प भी है, जिसे महात्मा गांधी के पार्थिव शरीर पर चढ़ाया गया था।
- इस भवन की खास बात ये भी है कि इसके निर्माण में लोहे का न के बराबर प्रयोग हुआ है।

- इसके केन्द्र में एक ऊंचा ताम्र गुम्बद है। यह पूरे भवन की ऊंचाई की दुगुनी ऊंचाई का है। इसको सांची स्तूप से प्रेरित होकर बनाया गया था।
- यह भवन सत्रह वर्षों में पूर्ण हुआ और सत्रह वर्ष ही ब्रिटिश राज्य में रह पाया। अपने निर्माण पूर्ण होने के अट्ठारहवें वर्ष में ही यह स्वतंत्र भारत में आ गया।
- भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल सी. राजगोपालाचार्य को यहां का मुख्य शयन कक्ष अतिआडंबर पूर्ण लगा। इसके कारण उन्होंने अतिथि कक्ष में रहना उचित समझा। उनके उपरांत सभी राष्ट्रपतियों ने यही परम्परा निभाई।
- राष्ट्रपति भवन के बैंक्वेट हॉल (Banquet Hall) में एक साथ 104 अतिथि बैठ सकते हैं।
- इस भवन के मार्बल हॉल में देश के वर्तमान राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की मोम की प्रतिमा लगी है। इस प्रतिमा को आसनसोल के कलाकार ने बनाया था।
- इसके अशोक हॉल में मंत्रियों के शपथ-ग्रहण जैसे समारोह होते हैं।
- राष्ट्रपति भवन में एक विज्ञान एवं नवाचार गैलरी है। इसमें एक रोबोट कुत्ता है। इसका नाम क्लम्सी है, जो बिल्कुल असली कुत्ते जैसा दिखाई देता है।

भारत का इतिहास 26

बच्चो, हर किसी को अपने देश का इतिहास जानने की उत्कंठा रहती है। फिर भारत का अपना इतिहास तो बेहद समृद्धशाली और सांस्कृतिक विशेषताओं से भरपूर रहा है। 'भारत का इतिहास' कॉलम में हम आपको इसी इतिहास का संक्षिप्त परिचय क्रमशः करा रहे हैं।

अंग्रेजों का आगमन एवं साम्राज्य की स्थापना

पुर्तगाली वास्कोडिगामा द्वारा भारत के समुद्री रास्ते की खोज के बाद यूरोप के पुर्तगाली, हॉलैण्ड, फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के लोग भारत में व्यापार करने के बहाने आने लगे। लेकिन उनका वास्तविक उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार एवं अपने साम्राज्य की स्थापना था। अपने स्वार्थों के लिए ये लोग आपस में भी लड़ते थे। धीरे-धीरे करके अंग्रजों ने सभी यूरोपीय शक्तियों को हराकर भारतीय व्यापार पर अपना एकाधिकार कर लिया।

भारतीयों को लालच देकर एक दूसरे से लड़ाकर एक-एक करके भारत के हिस्सों पर ईस्ट इंडिया कम्पनी के नाम से अधिकार कर लिया। वर्ष 1757 में प्लासी के युद्ध और सन् 1764 में बक्सर युद्ध के बाद मुगल सत्ता का अंत कर वर्ष 1817-18 में राजपूतों से सहायक संधि एवं सन 1847 में सिक्खों को हराकर अंग्रेज भारत के एकछत्र शासक बन गये। उन्होंने स्थान-स्थान पर भारतीयों का अपमान करना प्रारम्भ कर दिया, और सभी प्रकार से भारत का धन लूट-लूट कर अपने देश को मालामाल करते गये।

(अगले अंक में जारी)

बिल्ला करता है ग्राहकों का वेलकम

आपने जानवरों की वफादारी के किस्से तो खूब सुने होंगे। लेकिन यह कुछ अलग है। एक दिलचस्प मामले में न्यूयॉर्क के चाइनाटाउन में एक बिल्ला (बोबो) पिछले 9 साल से एक स्टोर में काम कर रहा है। खास बात यह है कि इस दौरान उसने एक बार भी छुट्टी नहीं ली है। इस बिल्ले को नौ साल पहले स्टोर में ही काम करने वाला एक कर्मचारी लेकर आया था। तबसे यह बिल्ला इसी स्टोर में काम कर रहा है। इस बिल्ले को लाने के बाद स्टोर में ही काम करने वाली महिला ऐनी इसकी देखभाल करने लगीं। उन्होंने बताया कि यह स्टोर के गेट पर बैठकर ग्राहकों का स्वागत करता है। अब तो यह स्टोर में आने वाले नियमित ग्राहकों को पहचानने भी लग गया है।

कुत्ते के लिए आईफोन

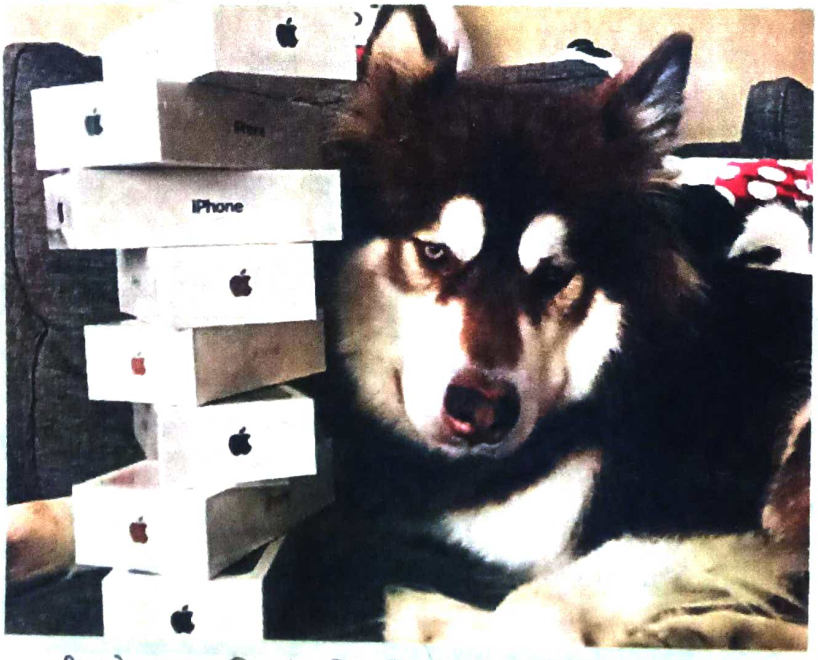

चीन के अरबपति वांग जियालिन के इकलौते बेटे वांग सिकॉन्ग ने अपने पालतू कुत्ते के लिए आठ आईफोन 7 एस खरीदे हैं। इनकी कीमत लगभग करीब 6.50 लाख रुपए है। वांग जियालिन चीन में डलियन वांडा ग्रुप के चेयरमैन हैं। उनके बेटे वांग सिकॉन्ग ने अपने पालतू कुत्ते कोको के लिए लॉन्च होने वाले दिन ही आठ आईफोन 7 एस खरीद लिये। इसके बाद उन्होंने कोको (पालतू कुत्ते) और आईफोन के साथ सोशल मीडिया पर फोटो पोस्ट की।

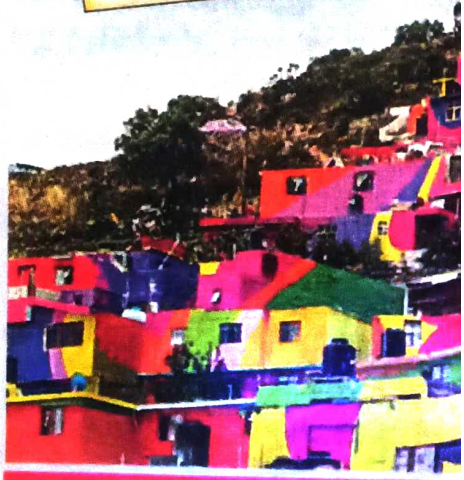

कलरफुल विलेज

इस गांव के बारे में शायद आप न जानते हों। लेकिन जानने के बाद इसे एक बार यहां घूम कर जरूर देखना चाहेंगे। आज हम मेक्सिको में बने पाल्मितास गांव की बात कर रहे हैं।

जुड़वां बच्चों का गांव

भारत के केरल राज्य में मल्लापुरम जिले में कोथिनी नामक एक गांव ऐसा है, जिसे जुड़वां बच्चों का गांव कहा जाता है। इस गांव की खासियत है कि यहां ज्यादातर बच्चे जुड़वां ही पैदा होते हैं। यही कारण है कि इस छोटे से गांव में 350 के करीब जुड़वां लोग हैं। यही नहीं, इस गांव की लड़कियां, जिनके विवाह दूसरी जगहों पर हुए हैं, उनके यहां भी जुड़वां बच्चों के पैदा होने के मामले प्रकाश में आ रहे हैं। गांव के लोगों के अनुसार यहां सबसे पहले वर्ष 1949 में जुड़वां बच्चों का जन्म हुआ था। तब से यह सिलसिला अब तक जारी है।

यह एक ऐसा गांव है, जहां पर डिजाइनरों ने इस गांव को पूरी तरह से अलग ही प्रकार के रंगों में रंग दिया है।

यह गांव देखने में इतना सुंदर लगता है कि हर किसी की नजर इसकी ओर टिकी रहती है। इस गांव में करीब 209 घर हैं। इनको कलरफुल रंगों से प्रिंट किया गया है।

भेड़ पर भारी ऊन

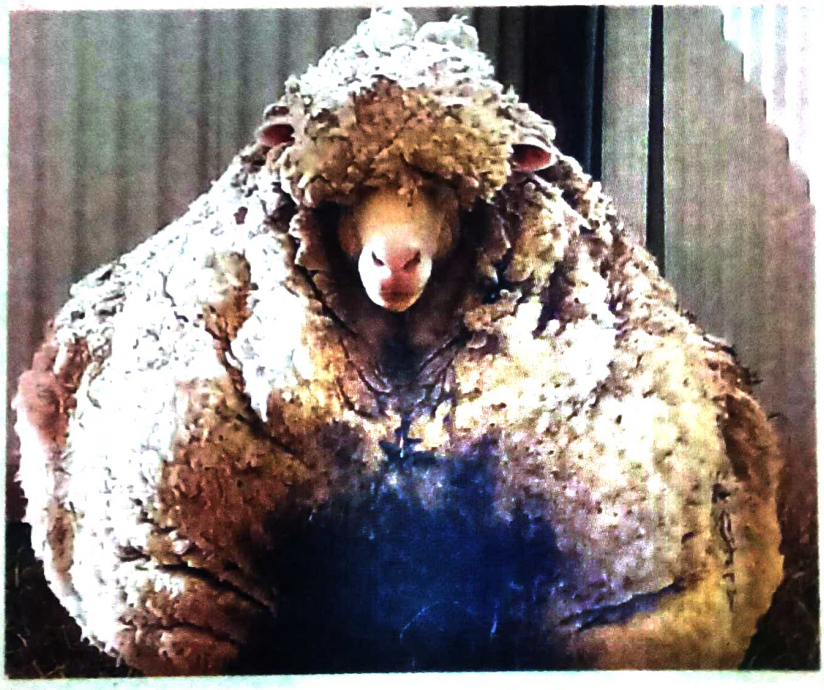

ऑस्ट्रेलिया में एक भेड़ से 40.45 किलो ऊन प्राप्त की गई। इसी के साथ इस भेड़ ने नया रिकॉर्ड बना दिया। ऑस्ट्रेलिया की राजधानी कैनबरा के बाहरी इलाके में यह भेड़ पायी गई। क्रिस नाम की इस भेड़ पर ऊन का इतना बोझ हो चुका था कि चलने में भी दिक्कत होती थी। भेड़ के शरीर से पिछले पांच वर्षों से ऊन नहीं निकाली गई थी। इतनी ज्यादा मात्रा में ऊन होने से भेड़ की जान को खतरा भी था।

सीख सुहानी

ज्ञान बांटने से बढ़ता है

महान गणितज्ञ यूक्लिड बेहद विनम्र स्वभाव के थे। उनका मानना था कि अपना ज्ञान दूसरों में हरदम बांटते रहना चाहिए। इसलिए जब भी कोई उनके पास किसी तरह की जानकारी लेने आता तो वे उत्साहपूर्वक उसे सब कुछ बताते थे। इसलिए उनसे गणित सीखने वालों की संख्या अच्छी-खासी हो गई थी। कई बार तो वह अपना निजी काम छोड़कर भी दूसरों की जिज्ञासा शांत करते रहते थे। एक दिन यूक्लिड के पास एक लड़का आया और उसने उनसे ज्यामिति पढ़ाने का आग्रह किया।

यूक्लिड ने अपनी आदत के मुताबिक यह प्रस्ताव सहज रूप से स्वीकार कर लिया। वह उसे उसी क्षण से ज्यामिति पढ़ाने लगे। लड़का काफी प्रतिभाशाली था। उसने बड़ी तेजी से सीखना आरंभ कर दिया। इससे यूक्लिड काफी प्रसन्न थे। एक बार यूक्लिड उसे एक प्रमेय पढ़ा रहे थे। अचानक लड़के ने सवाल कर दिया, 'इस प्रमेय को पढ़ने से मुझे क्या लाभ होगा?' यह सुनते ही यूक्लिड नाराज हो गए और अपने नौकर से बोले, 'इसे एक ओबेल (यूनानी सिक्का) दे दो। क्योंकि यह विद्या हासिल करने में कम, धन कमाने में अधिक रुचि रखता है। जो धन कमाने में रुचि रखता है, उसके लिए किसी भी तरह की शिक्षा बेकार है।'

उनके मुंह से यह सुनकर वह लड़का ही नहीं, दूसरे छात्र भी दंग रह गए। उस लड़के ने अपनी भूल स्वीकार कर यूक्लिड से क्षमा मांगी। यूक्लिड ने कहा, 'शिक्षा आत्मसमृद्धि का मार्ग है। उसे कभी भौतिक लाभ के तराजू में नहीं तौलना चाहिए। और वह जहां से जिस मात्रा में मिले, उसे आत्मीयता से ग्रहण करना चाहिए।'

सीख : ज्ञान बांटने से बढ़ता है। इसे अधिक से अधिक बांटें।

सीखने की जिज्ञासा

यह महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के बचपन की घटना है। एक बार गणित की कक्षा में अध्यापक ने ब्लैकबोर्ड पर तीन केले बनाए और पूछा, 'यदि हमारे पास तीन केले हों और तीन विद्यार्थी, तो प्रत्येक विद्यार्थी के हिस्से में कितने केले आएंगे?' एक बालक ने तपाक से जवाब दिया, 'प्रत्येक विद्यार्थी को एक-एक केला मिलेगा। अध्यापक ने कहा, 'बिल्कुल ठीक।

अभी भाग देने की क्रिया को अध्यापक आगे समझाने ही जा रहे थे कि रामानुजन ने खड़े होकर सवाल किया, 'सर! यदि किसी भी बालक को कोई केला न बांटा जाए, क्या तब भी प्रत्येक बालक को एक केला मिलेगा?' यह सुनते ही सारे के सारे विद्यार्थी हो-हो करके हंस पड़े। उनमें से एक ने कहा, 'यह क्या मूर्खतापूर्ण सवाल है।' इस बात पर अध्यापक ने मेज थपथपाई और बोले, 'इसमें हंसने की कोई बात नहीं है। मैं आपको बताऊंगा कि यह बालक क्या पूछना चाहता है।' बच्चे शांत हो गए। वे कभी आश्चर्य से शिक्षक को देखते तो कभी रामानुजन को। अध्यापक ने कहा, 'यह बालक यह जानना चाहता है कि यदि शून्य को शून्य से विभाजित किया जाए, तो परिणाम क्या एक होगा?'

आगे समझाते हुए अध्यापक ने बताया कि इसका उत्तर शून्य ही होगा। उन्होंने यह भी बताया कि यह गणित का एक बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल था और अनेक गणितज्ञों का विचार था कि शून्य को शून्य से विभाजित करने पर उत्तर शून्य होगा, जबकि अन्य कई लोगों का विचार था कि उत्तर एक होगा। अंत में इस समस्या का निराकरण भारतीय वैज्ञानिक भास्कर ने किया। उन्होंने सिद्ध किया कि शून्य को शून्य से विभाजित करने पर परिणाम शून्य ही होगा, न कि एक।

सीख : जिज्ञासा ज्ञान प्राप्ति के लिये अत्यावश्यक है।

एक प्रसिद्ध चीनी यात्री व बौद्ध धर्म के प्रति समर्पित विद्वान से जुड़ी चित्रात्मक प्रस्तुति। चित्रकथा के पहले भाग के 16 पृष्ठ इस बार दिये जा रहे हैं। शेष अगले अंक में दिये जायेंगे।

ह्वेनसांग

(पहला भाग)

1

फाहियान के बाद ह्वेनसांग भारत में आने वाला दूसरा चीनी यात्री था। बौद्ध धर्म का अनुयायी ह्वेनसांग भारत में सत्रह वर्षों तक रहा। यहां रहकर उसने बौद्ध के सिद्धान्त, मत और शिक्षा पर विशद अध्ययन कर ज्ञानार्जन किया। भारत से प्राप्त बौद्ध धर्म के शिक्षा-सिद्धान्तों को चीनी भाषा में अनुवाद कर बौद्ध धर्म के विस्तार में ह्वेनसांग ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। चीन के हेनान प्रांत में जन्मे (602-664 ईस्वी) ह्वेनसांग ने विज्ञान और बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का गहन अध्ययन किया। मात्र तेरह वर्ष की उम्र में बौद्ध मठों-मंदिरों में बौद्ध धर्म के विद्वानों को संबोधित किया।

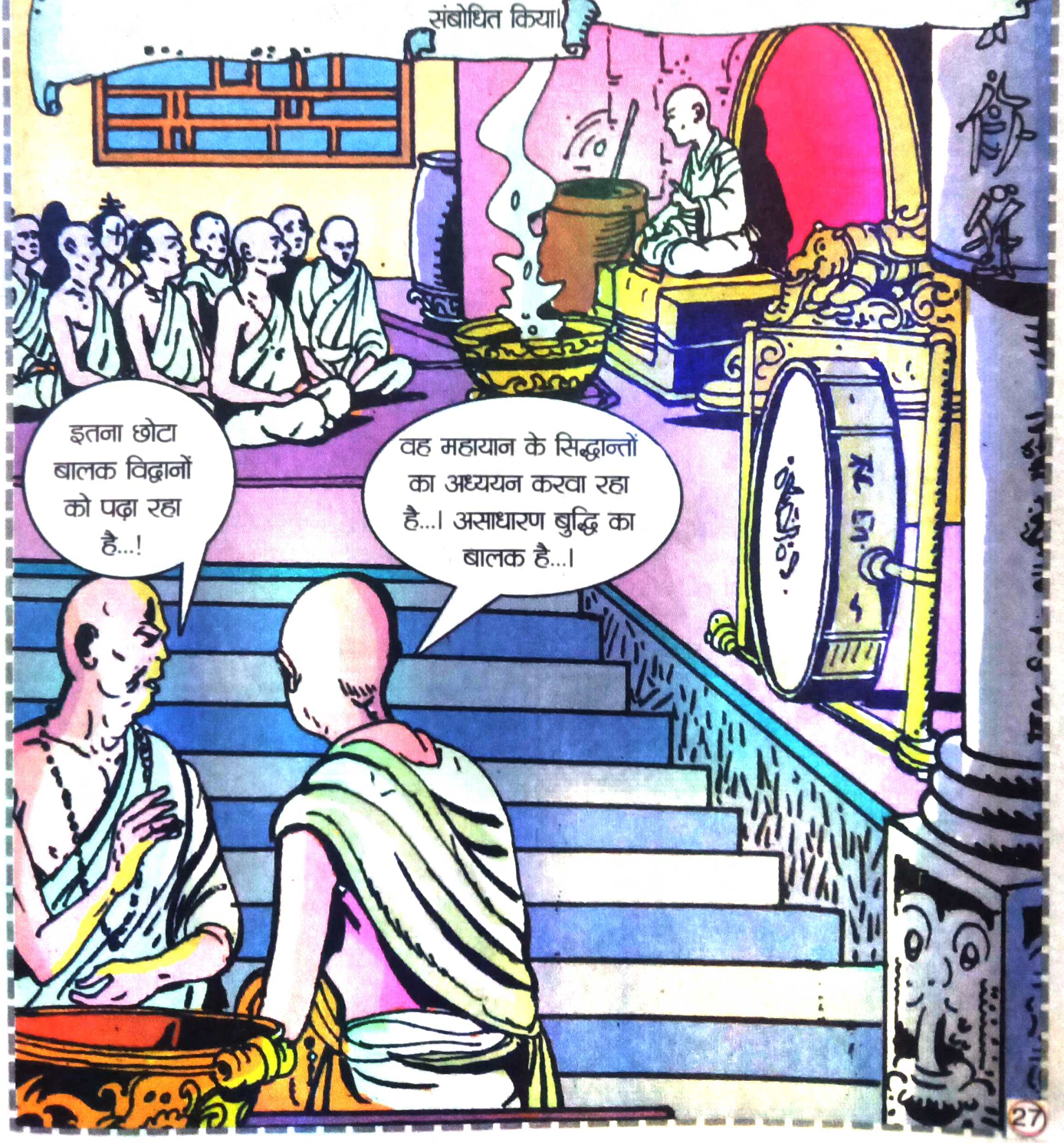

2
सुइ राजवंश के पतन के बाद वहां उपजे संघर्ष और अकाल के कारण ह्वेनसांग अपने भाई के साथ चांग एन चला गया। वहां वह बीस साल की उम्र तक रहा। यहां रह कर उसने अपनी शिक्षा-दीक्षा पूरी की।
मुझे बौद्धधर्म के सिद्धान्तों-आदर्शों का अध्ययन करना है। मैं भारत की यात्रा पर जा रहा हूं....।
सांग...! तुम यहां रहकर पूर्ण विद्वान बन गये हो...
नहीं, गुरुदेव...
क्या...? तुम्हें मालूम नहीं है कि विदेश में जाना पाप है?
हां, मुझे मालूम है, लेकिन मुझे जाना ही होगा...
एक रात ह्वेनसांग बिना किसी को बताए अपने देश से रवाना हो गया।

ह्वेनसांग को यात्रा के दौरान असंख्य परेशानियों का सामना करना पड़ा। यहां तक कि रेगिस्तान में उसका घोड़ा भी मर गया। वह रेगिस्तान में बिना-भोजन-पानी के दिशाहीन होकर भटकता रहा।
ओह...! यह रेगिस्तान खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा। चारों ओर कोई भी नजर नहीं आ रहा...।
कुछ दूर गुजर रहे सैनिकों के एक समूह ने ह्वेनसांग को देखा।
तुम कौन हो...? और इस जगह क्या कर रहे हो?
कृपया मुझे हानि न पहुंचाएं...मैं बौद्ध संन्यासी हूं...।
मैं भारत देश की यात्रा पर हूं। वहां मैं बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों की शिक्षा-दीक्षा लूंगा।
मूर्खतापूर्ण...! यह यात्रा संन्यासियों के लिए पूरी करना असंभव है...।
यह बहुत ही कठिन और लम्बी यात्रा है...। तुम्हें यहीं से लौट जाना चाहिए?
कृपया मुझे जाने के लिए बाध्य न करें। मेरे लिए लौटने से मरना भला है...।
ठीक है...! मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।

सैनिकों के दिये घोड़े से ह्वेनसांग ने भारत के लिए अपनी यात्रा जारी रखी। बिना खाना-पानी के यात्रा काफी कष्टकारक थी।
हे बोधिसत्त्व...! हमारी सहायता करो। यह यात्रा आपके बारे में सच्चाई जानने के लिए ही है।
अचानक, एक चमत्कार की तरह ठंडी हवा चलने लगी।
आहा...! लगता है, यहां आसपास जल है...।
जैसे ही वह थोड़ी दूर गया...
आहा... आहा... ठंडा पानी...यह सब बोधिसत्त्व का आशीर्वाद है।
उनकी यात्रा जारी रही, और वे तुरफान पहुंचे।
आइए... आइए विद्वतजन...! मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजिए...।

लेकिन ह्वेनसांग को इसका आभास नहीं था कि तुरफान का आतिथ्य उसके लिए जी का जंजाल बन जाएगा।
महाराज मुझे आज्ञा दीजिये। मुझे भारत यात्रा पूरी करनी है।
कहां की यात्रा पूरी करनी है...?
मेरा महल आप जैसे विद्वान के लिए सबसे उत्तम है।
क्षमा करें... आप मेरी इस ज्ञान-प्राप्ति की यात्रा को न रोकें।
असंभव...! यदि तुमने जाने की कोशिश की तो मुझे तुम पर बल प्रयोग करना पड़ेगा।
तुरफान के राजा ने ह्वेनसांग पर नजर रखने के लिए तीन सैनिक नियुक्त कर दिये। ह्वेनसांग ने बिना कुछ खाये-पीये तीन दिन बिताये।
लगता नहीं कि वह मेरी बात मानेगा...।

...और अंत में, ह्वेनसांग बेहोश हो गया।
बहुत हो गया... इसे यहां से मुक्त करो...
गुरुदेव... मैं आपके दृढ़ निश्चय के आगे नतमस्तक होता हूं। मुझे क्षमा करें।
यह लो सूची पत्र...। इस पत्र के माध्यम से आपको बीस देशों के शासकों की जानकारी मिल जाएगी।
अब आप अपनी योजनानुसार प्रयाण कर सकते हो। मैं कुछ सैनिकों को आपके साथ भेज देता हूं।
आपकी कृपा, महाराज...!
इस प्रकार, ह्वेनसांग शाही सैनिकों के साथ अपनी यात्रा पुनः शुरू करता है... कई राज्यों को पार करते हुए तुर्क के खान के राज्य में पहुंचता है...।
पधारिये संन्यासी...!

तुर्की के खान ने एक विद्वान के रूप में, ह्वेनसांग को बौद्ध धर्म के बारे वह सब बताया, जितना वह जानता था।
खान साहब काफी दिन हो गये... अब मुझे चलना चाहिए।
मैं तो आपको जाने के लिए नहीं कहूंगा...।
आपको पश्चिम की तरफ से यात्रा नहीं करनी चाहिए... वहां के लोग बहुत ही निर्दयी और बर्बर हैं।
मैं नहीं डरता...। मैं भगवान बुद्ध के उपदेशों की खोज में जा रहा हूं।
यदि आपकी ऐसी ही इच्छा है तो मैं आपको नहीं रोकूंगा!
मेरे सैनिक आपको समरकंद तक ले जाएंगे।
समरखंड पहुंचने पर ह्वेनसांग ने वहां के राजा से मुलाकात की। ज्योंही उन्होंने बात करना शुरू किया...
आह... बचाओ...!

8
अरे...! क्या बात है?
महाराज, हम गरीब साधु हैं। ये निर्दयी लोग हमें मारना चाहते हैं।
इन्हें ईश्वर की पूजा-पाठ पसंद नहीं है। ये हमें जिंदा जलाना चाहते हैं।
अच्छा..., इन्हें बंदी बना लो।
इन दुष्टों का सिर धड़ से अलग कर दो...
ऐसा न करें महाराज...

समरकंद का राजा आश्चर्यचकित था।
आप चाहते हैं कि मैं इन दुष्टों को बिना सजा दिये छोड़ दूं...? ये दुष्ट फिर से परेशानी पैदा करेंगे।
नहीं, महाराज...! यदि आप इन पर दया करेंगे तो ये अगली बार ऐसा नहीं करेंगे।
गुरुदेव...! आपने हमारी जान बचाई...
आपने हमें नई जिंदगी दी है...
समरकंद से अपनी यात्रा जारी रखते हुए ह्वेनसांग अफगानिस्तान के बामियान पहुंचा। इस दौरान राह में उसे जबरदस्त बर्फीले तूफान का सामना करना पड़ा।

10
मार्ग की कठिनाइयों का सामना करते हुए ह्वेनसांग भारत में नगराहारा पहुंचा। यहां बुद्ध की मृत्यु उपरान्त उनकी अस्थियों को संरक्षित रखा गया था।
शुभागमन, आइए संन्यासी...
पुजारियों ने ह्वेनसांग को एक पूजा में काम लिया हुआ सुगंधित रुमाल उपहार स्वरूप दिया।
यह लीजिए, इसमें भगवान बुद्ध की अस्थियां भी हैं...।
अस्थियां लेकर ह्वेनसांग ने प्रार्थना की...
देखो...! यह तस्वीर दिखाती है कि...
यह तो बोधि वृक्ष का चित्र है।
भगवान बुद्ध की आप पर कृपा है...

इसके बाद, ह्वेनसांग बुद्धत्त्व की खोज में निकल गये। कुछ लोगों ने उसे रास्ते में रोक लिया।
यदि अपनी जान प्यारी है तो रुक जाओ।
नहीं...! मैं बोधिसत्त्व के लिए जा रहा हूं। मुझे किस बात का भय?
डाकू आश्चर्यचकित रह गये।
हा... हा... बुद्ध के बारे में जानकारी...? उसे कोई नहीं देख सकता...
इसको भी उसी गुफा में ले चलो...
तुम हमें भी बुद्ध के दर्शन कराओ, अन्यथा हम तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ेंगे।
डाकू जंगल के मध्य स्थित गुफा में ह्वेनसांग को ले आते हैं।
बौद्धिसत्त्व... अपने-आपको मुझमें प्रकट करो...
ह्वेनसांग गुफा में ध्यान की मुद्रा में काफी देर तक बैठे रहे।

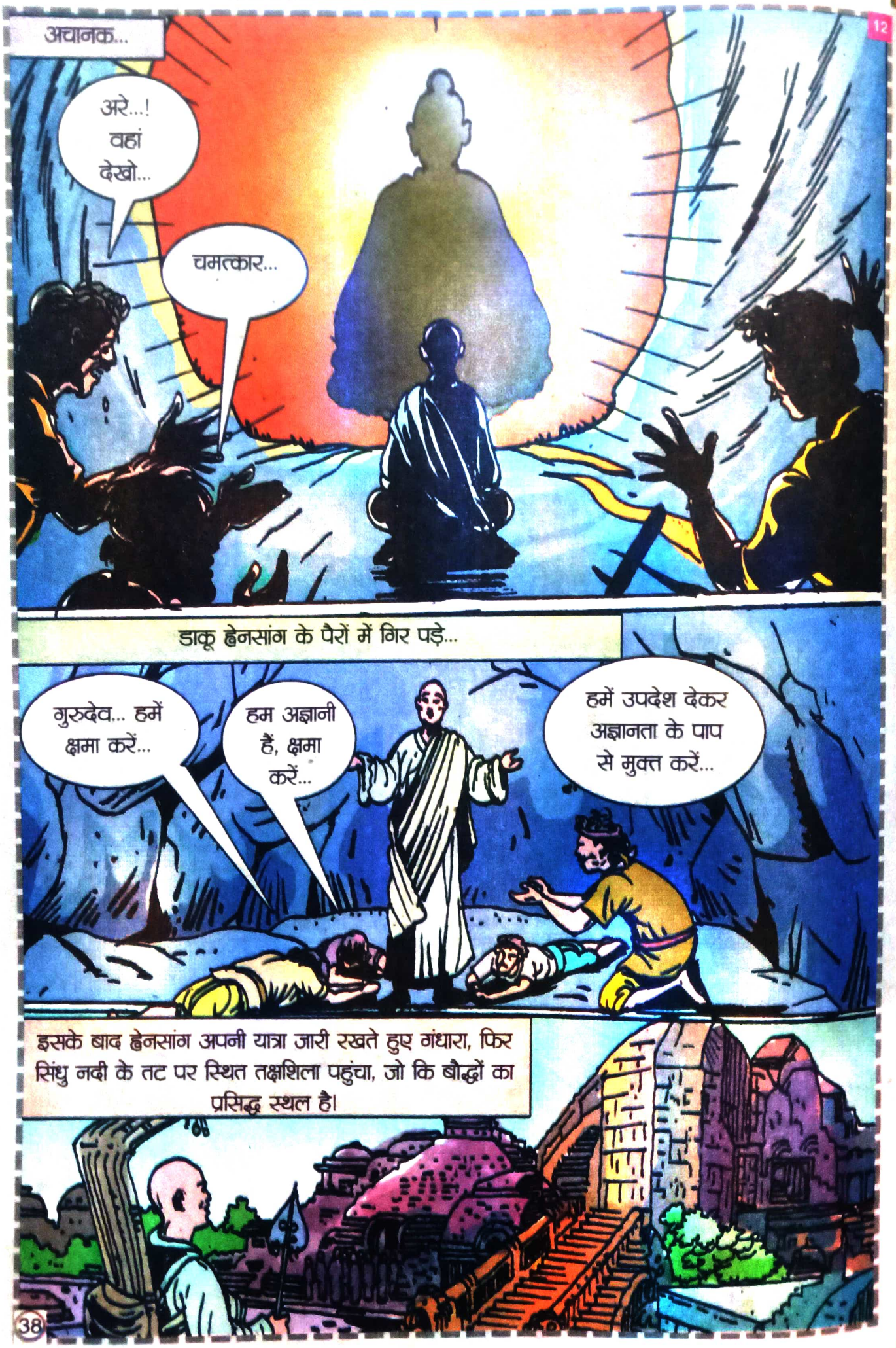
अचानक...
12
अरे...! वहां देखो...
चमत्कार...
डाकू ह्वेनसांग के पैरों में गिर पड़े...
गुरुदेव... हमें क्षमा करें...
हम अज्ञानी हैं, क्षमा करें...
हमें उपदेश देकर अज्ञानता के पाप से मुक्त करें...
इसके बाद ह्वेनसांग अपनी यात्रा जारी रखते हुए गंधारा, फिर सिंधु नदी के तट पर स्थित तक्षशिला पहुंचा, जो कि बौद्धों का प्रसिद्ध स्थल है।

तक्षशिला से ह्वेनसांग कश्मीर आ गया। यहां वह कश्मीर के राजा के यहां मेहमान के रूप में दो वर्ष तक रहा।
इनके अध्ययन के लिए संपूर्ण व्यवस्था की जाए...।
ह्वेनसांग ने यहां ठहर कर बौद्ध धर्म की शिक्षा-सिद्धान्तों का अध्ययन किया। और जो भी आवश्यक था उसकी नकल करके चीन ले गया।
कश्मीर के राजा से आज्ञा लेकर ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा पुनः शुरू की। अपनी यात्रा के दौरान जब वे चीन के मुक्ति जंगल को पार कर रहे थे।
ओह... डाकू...!
हा...हा...! जो कुछ भी तुम्हारे पास है, जल्दी से हमारे हवाले करो वरना...

डाकुओं ने उनका सब कुछ लूट लिया। वस्त्र भी उतरवा लिये।
गुरुदेव... हमें इनसे बचकर भागना होगा। वरना डाकू हमें जीवित नहीं छोड़ेंगे।
हां...
अरे...! वे भाग रहे हैं...
उन्हें पकड़ कर मौत के घाट उतार दो।
वे अपनी जान बचाने के लिए अंजान रास्तों से भाग रहे थे।
वे एक जलाशय को तैर कर एक गांव में पहुंचे।
क्या...!? डाकू...?!
उन्हें हमें सबक सिखाना चाहिए।

गांव वाले हथियार लेकर डाकुओं को सबक सिखाने के लिए गये। उन्हें देखते ही डाकू वहां से बचकर निकल भागे।
गांव वालों ने उनको अन्न-वस्त्र देकर विदा किया।
हम आपका अहसान कभी नहीं भूलेंगे।
गुरुदेव आप पुनः पधारें...
यह यात्रा गंगा की उत्पत्ति स्थल गंगोत्री के लिए थी।
हम यहां पहुंच कर धन्य हो गये।
इसके बाद ह्वेनसांग ने विभिन्न भारतीय शहरों का भ्रमण करते हुए कई तरह का ज्ञानार्जन अर्जित किया। इसके बाद अपने साथियों के साथ प्रयाग पहुंचे।
आओ... नाव में बैठते हैं।

ह्वेनसांग की यात्रा में कठिनाइयों का दौर जारी था। लेकिन बुद्धत्व के प्रति समर्पित ह्वेनसांग हिम्मत कर यात्रा के अगले पड़ाव पार करता रहा। आगे वह कितने राजा-महाराजाओं के राज्यों में जाकर बौद्ध धर्म की जानकारी जुटाएगा, और चीन लौटते समय क्या-क्या साथ ले जाएगा...। इन सभी सवालों और जिज्ञासाओं के जवाब अगले अंक के समापन भाग में होंगे।

(अगले अंक में समाप्य)

फूल की कहानी

एक फूल था बहुत सुन्दर
उस विशाल बगीचे के अन्दर
जिसका माली था ईश्वर
जिसे पूजते हैं हम अक्सर

खिलखिलाकर खुशबू फैलाकर
प्यार-दुलार सब का पाकर
विराजा फूल शान बढ़ाकर
उस पौधे की शोभा बढ़ाकर

जलता था माली उस फूल से
तोड़ डाला उसे उस पेड़ से
चीर डाला उस सुन्दर फूल को
कुचला बेरहम माली ने उस फूल को

पूछना है मुझे उस माली से
कुचला जिसने उसे बेरहमी से
जनम ही दिया क्यों तुमने उसे
जब पालना ही नहीं था तुम्हें उसे

वसंत की शान हैं फूल

रंगों की पहचान हैं फूल
हम सबकी मुस्कान हैं फूल
ऋतु वसंत की शान हैं फूल
ईश्वर का वरदान हैं फूल

कांटों में भी ये उग जाते
हर मुश्किल को धता बताते
कीचड़ में भी ये खिल जाते
फिर भी सबके मन को भाते

खुशबू की पहचान हैं फूल
मां धरती की आन हैं फूल
सुन्दरता का मान हैं फूल
उपवन की तो जान हैं फूल

मिलकर रहना ये सिखलाते
भेदभाव ना ये दिखलाते
कोमलता का पाठ पढ़ाते
मुस्काना हमको सिखलाते

टोरंटो

सैर सपाटा

इस शहर की आधुनिकता और भव्यता देखते ही बनती है। यहां की ऊंची-ऊंची इमारतें पर्यटकों को रोमांचित करती हैं। विशाल समुद्र, जल प्रपात, चिड़ियाघर, म्यूजियम, गैलेरियां, किले और महल सैलानियों को बहुत आकर्षित करते हैं। यहां सालभर पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है।

टोरंटो कनाडा का सबसे बड़ा शहर है। इस शहर में कला, फिल्म-निर्माण के बड़े-बड़े केंद्र हैं। यहां पर्यटकों के मनोरंजन और देखने के लिए बहुत कुछ है। इस शहर में कई देशों के लोग रहते हैं। इससे यहां की संस्कृति में कई रूप दिखाई देते हैं।

यहां का शांत वातावरण और सीएन टॉवर आने वाले पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किए बिना नहीं रहता है। इस टॉवर को कई किलोमीटर दूर से ही देखा जा सकता है। करीब 553 मीटर ऊंचाई वाले इस टॉवर के सामने समुद्र तट पर बनी अन्य ऊंची-ऊंची इमारतें बौनी लगती हैं।

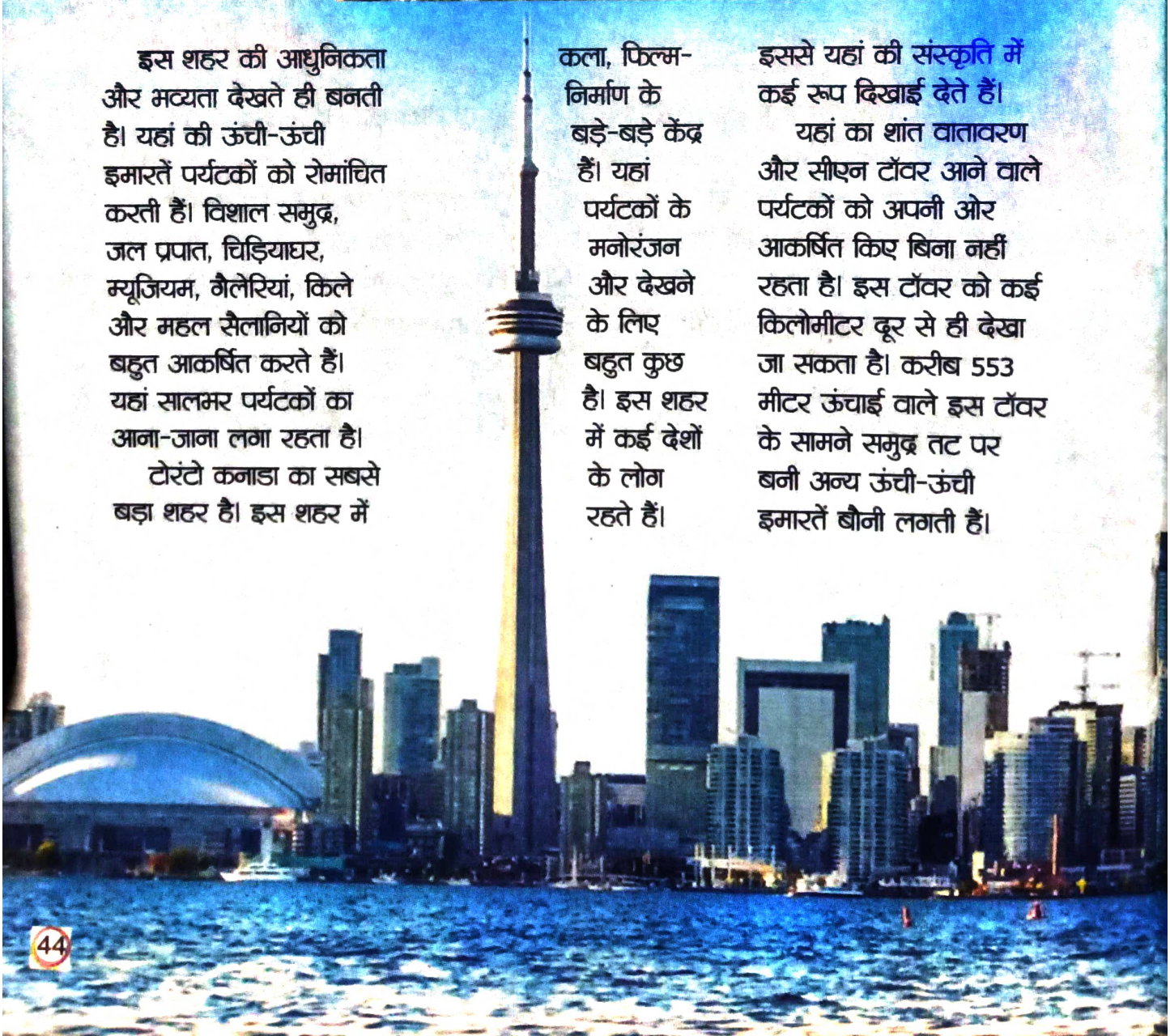

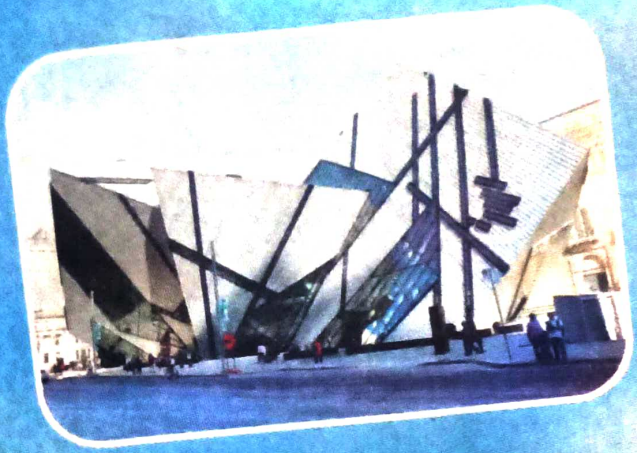

द रॉयल ऑनटारों म्यूजियम में विश्व कल्चर की झलक देखने को मिलती है। यहां का चिड़ियाघर विश्व के श्रेष्ठ चिड़ियाघरों में गिना जाता है। इस चिड़ियाघर में करीब चार सौ साठ प्रजातियों के पांच हजार जानवर रहते हैं। यहां की आर्ट गैलरियों में तत्कालीन समय की कनाडाई, यूरोपियन, अफ्रीकन मिट्टी की कलाकृतियों सहित अन्य चीजें संग्रहीत हैं।

बाटा शू म्यूजियम आकर्षण का केन्द्र है। इसके अलावा टैक्सटाइल म्यूजियम और साल में एक बार लगने वाले मेले में सैकड़ों लोग भाग लेते हैं। इसके अलावा यहां के मनोरंजक पार्क, ऊंची-ऊंची भव्य इमारतें, समुद्री तट, काशा लोमा किला, पर्यटकों की यात्रा को यादगार बनाते हैं।

गुदगुदी प्राचीन चीन में प्रताड़ित करने का एक तरीका था। क्योंकि इसके कोई निशान नहीं छूटते।

दाएं हाथ से काम करने वाले व्यक्ति अपना खाना बाईं तरफ से खाते हैं।

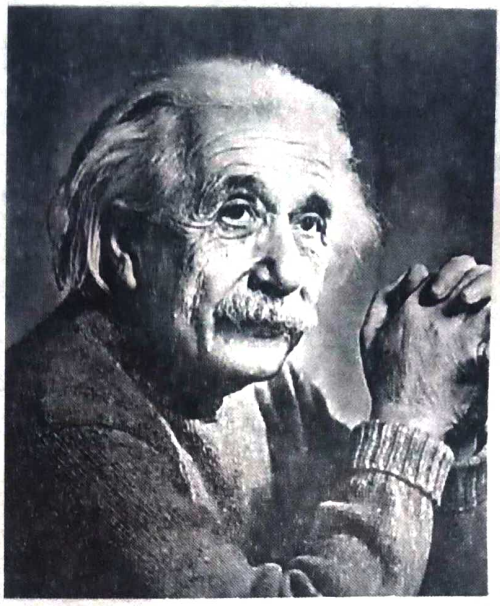

अल्बर्ट आइंस्टीन का मानना था कि अगर धरती से सारी मधुमक्खियां चली जाएं तो इंसान अगले 4 सालों में मर जाएगा।

अगर आप पांच मिनट से भी कम समय में सो जाते हैं तो इससे साबित होता है कि आप में नींद की जबरदस्त कमी है।

3 से 4 साल की उम्र से बच्चे सपने देखना शुरू करते हैं।

सपने में देखने वाले हर चेहरे से हम एक बार जरूर मिले होते हैं।

दिन में सपने देखना आपके दिमाग के लिये फायदेमंद होता है। इससे आप रचनात्मक बनते हैं।

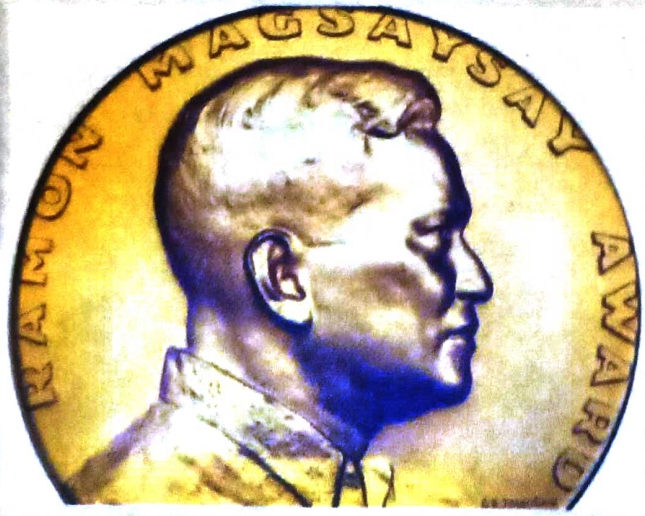

रमन मैग्सेसे पुरस्कार को एशिया का नोबेल पुरस्कार कहा जाता है।

ज्यादा खाना खाने के बाद इंसान की सुनने की शक्ति कम हो जाती हैं।

न्यूयॉर्क शहर का निक नेम बिग एप्पल है।

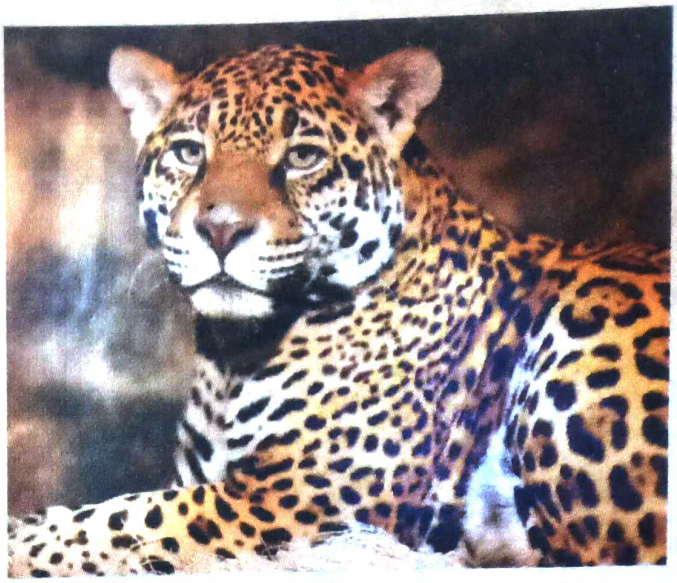

तेंदुआ रात के अंधेरे में भी देख सकता है।

गोल्डफिश अपनी आंखें कभी भी बंद नहीं करती हैं।

विश्व में इतनी तरह के सेब हैं कि हर दिन हम एक खाएं तो बीस सालों में भी उनकी संख्या पूरी नहीं होगी।

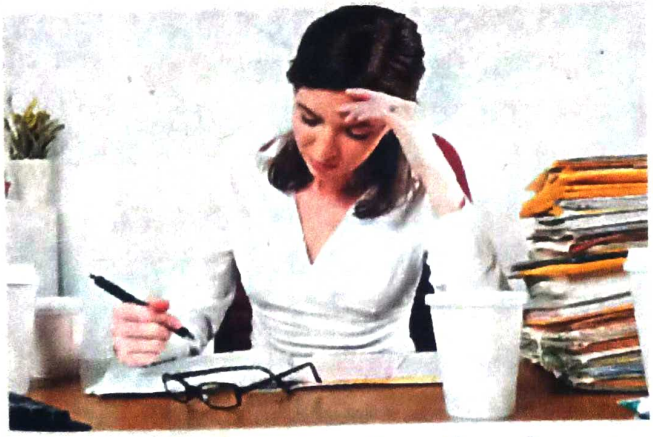

अगर कोई दिन में ग्यारह घंटे कुर्सी पर बैठा रहता है तो आने वाले तीन सालों में उसकी मृत्यु के चांस पचास प्रतिशत बढ़ जाते हैं।

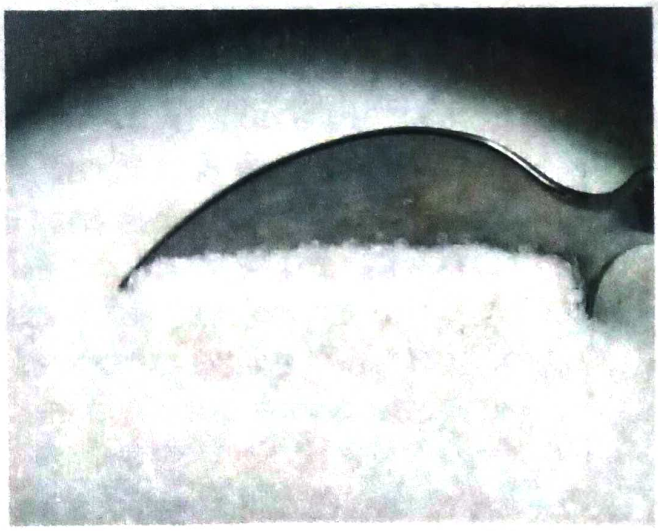

पहली बार चीनी भारत में ही बनाई गई थी।

ऐसा क्यों

सर्दी में बर्फबारी!

दरअसल हमारी धरती पर जल एक लगातार चक्र में चलता है। सूरज की गर्मी से नदियों, तालाबों और झीलों से जल भाप बनकर उड़ जाता है, और वातावरण में पहुंच जाता है। जब इस तरह के बहुत सारे वाष्पकण इकट्ठे हो जाते हैं, तो वे बादल का रूप ले लेते हैं। जब ये बादल आपस में टकराते हैं तो बारिश होती है।

लेकिन जब ये बादल वातावरण में अधिक ऊपर चले जाते हैं, तो वहां का वातावरण बहुत ठंडा हो जाता है। बादल का तापमान बहुत नीचे पहुंचने पर, बादलों में मौजूद वाष्प कण नन्हे-नन्हे बर्फ के कणों में बदल जाते हैं। हवा इन बर्फ-कणों का वजन सहन नहीं कर पाती, और ये कण बादल से नीचे की ओर गिरने लगते हैं। जब वो गिरते हैं, तो एक-दूसरे से टकरा कर जुड़ने लगते हैं। इस तरह इनका आकार बड़ा होने लगता है। जब ये कण पृथ्वी पर गिरते हैं, तो हम उसे बर्फबारी कहते हैं। यह कह सकते हैं कि बर्फ दरअसल जमा हुआ पानी है। बर्फबारी में धरती पर अक्सर बर्फ की सफेद चादर सी बिछ जाती है। गिरती हुई यह बर्फ हमेशा नर्म नहीं होती है। यह बर्फ गिरते हुए एक जगह इकट्ठी न गिरकर हवा के साथ इधर-उधर फैल जाती है। इसलिए यह कहीं बहुत ज्यादा और कहीं बहुत कम गिरती है।

कभी यह छोटे-छोटे पत्थर के रूप में, तो कभी बारिश के साथ गिरने वाले सख्त बर्फ यानी ओलों के रूप में भी गिरती है। बर्फ जहां भी गिरती है। वहां का तापमान काफी गिर जाता है। आसपास के इलाके सर्द हवाओं की चपेट में आ जाते हैं। यह बर्फबारी पहाड़ी इलाकों में अधिक इसलिए होती है, क्योंकि यहां का तापमान पहले ही काफी कम होता है।

उर्दू/ हिन्दी

किन्नब- भांग, भंग, विजया
किया- स्वामी, मालिक, पवित्र
किपल- खंड, अंश, टुकड़ा, हिस्सा
किब्रसिनी- बुढ़ापा, जरा, वृद्धावस्था
किन्न- वस्त्र, लिबास, पहनने के कपड़े

अंतर है

Chord- साज का एक तार
Cord- रस्सी
Complement- संपूरक
Compliment- प्रशंसा, तारीफ
Coarse- मोटा, रुखा
Course- पाठ्यक्रम

पर्यायवाची शब्द

कपड़ा- चीर, वसन, अम्बर, पट।
उत्पत्ति- जन्म, उद्भव, आरम्भ, उदय।
उद्दण्ड- दुष्ट, क्रूर, दुराचारी, असभ्य।
एकत्र- इकट्ठा, संचित, जमा, संकलित।
उपयोग- उपभोग, प्रयोग, सेवन, इस्तेमाल।

एक के तीन

Joint- जॉइंट- संयुक्त- संयुक्तः
Ticket- टिकट- टिकिट- चिटिका
Active- एक्टिव- चुस्त- सक्रियः
Coupon- कूपॉन- कूपन- पर्णिका

आप भला तो जग भला।
Good mind, good find.
आपका नौकर और खाये उधार।
Your servent and lives on credit.
आप काज महा काज।
Better do a thing than wish it to be done.
आप मरे जग प्रलय।
When I am dead, the world is gone.
आदमी की कदर मरे पीछे।
A man's worth is known after his death.

To burst out- चिल्ला उठना।
To Burst open- बलपूर्वक खोलना।
To burst into view- दृष्टिगोचर होना।
To fight in the bush- रात में (छिपकर) आक्रमण करना।

One Word

- A long narrative poem- **Epic.**
- Study of insects- **Entomology.**
- One who is employed- **Employee.**
- One who is taking examination- **Examinee.**
- An almirah where clothes are kept- **Wardrobe.**

- जिसकी आवश्यकता न हो- अनावश्यक।
- जिसका आदर न किया गया हो- अनादृत।
- जिसका मन कहीं अन्यत्र लगा हो- अन्यमनस्क।
- एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाला-जंगम।

लोकोक्तियां

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है- एक को देखकर दूसरे में परिवर्तन आता है।
खुदा गंजे को नाखून नहीं देता- अनधिकारी एवं दुर्भावी व्यक्ति को अधिकार नहीं मिलता।
गंगा का आना हुआ और भागीरथ को यश- काम तो होना ही था। यश किसी को मिल गया।

शब्द युग्म

अरबी- अरब की भाषा
अरवी- एक कन्द
असित- काला, अश्वेत
अशित- खाया हुआ
अवलम्ब- सहारा
अविलम्ब- तुरन्त
अरावल- आगे चलने वाली सेना
अरावली- पर्वत शृंखला का नाम

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

art junction

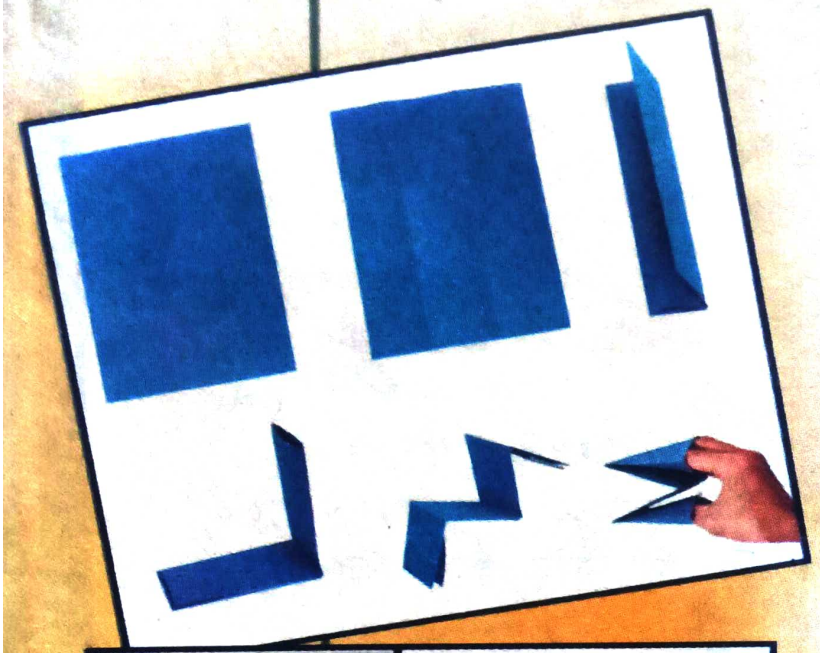

हैण्ड पपैट

सामग्री

ड्रॉइंगशीट, फेविकोल, रंगीन क्राफ्ट पेपर, काला मार्कर पेन, पोस्टर कलर, डेकोरेटिव बनाने के लिए स्टोन या लेस का प्रयोग भी कर सकते हैं।

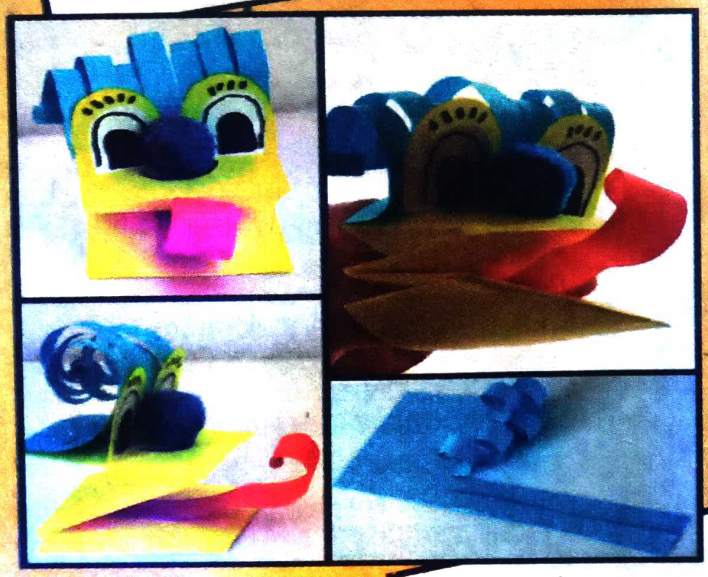

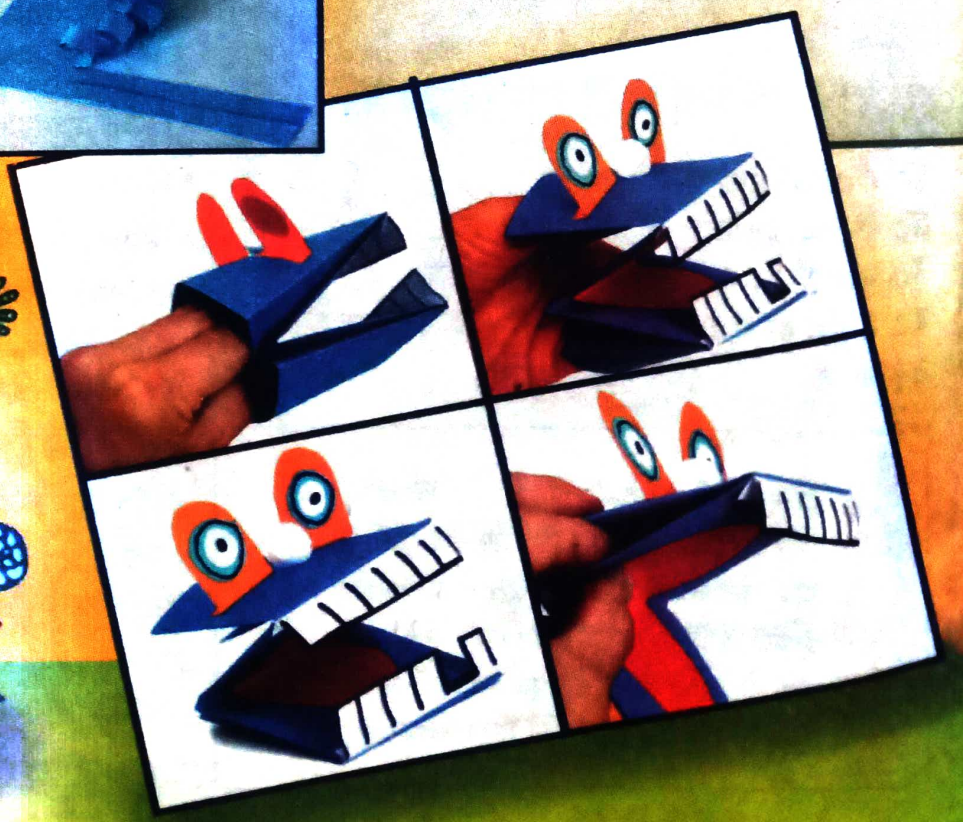

विधि

शीट को लंबे आकार में काट लें। उसको लंबाई में तीन बराबर भाग में मोड़ लें। इसी तरह चौड़ाई में भी बराबर भागों में मोड़ लें। लंबाई इतनी हो कि इसे अपने हाथों में पहना जा सके। इसके मुंह के अंदर लाल क्राफ्ट पेपर काटकर चिपका दें। आंखों की जगह दो गोले काटकर चिपका दें। आप चाहें तो लंबी जीभ बना सकते हैं या दांत बना सकते हैं। काले मार्कर पेन से आंखें व दांतों की लाइनें आदि बना दें। इसे अंगुली तथा अंगूठे में पहनकर बच्चों के साथ खेलिए।

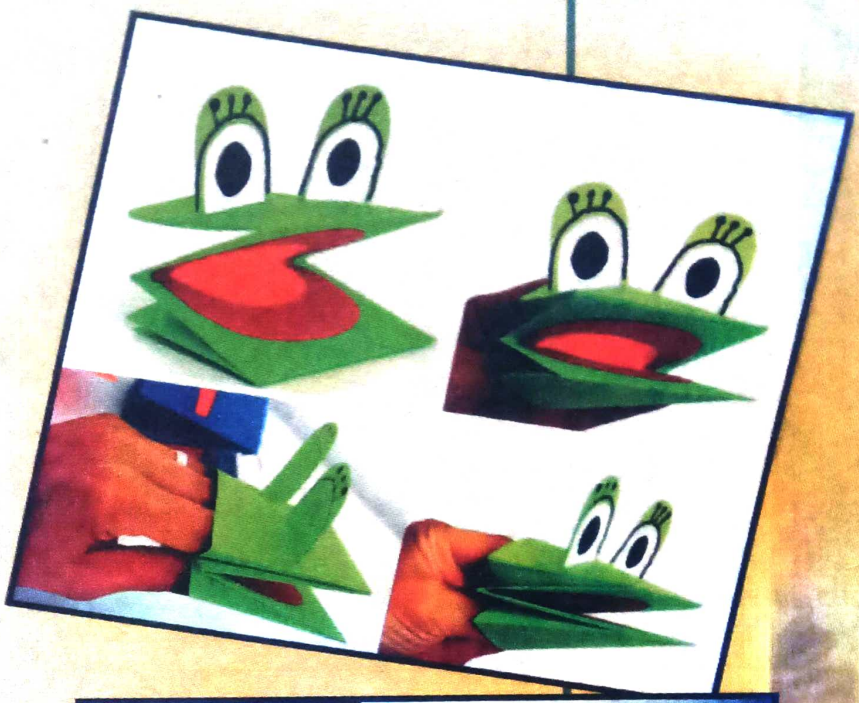

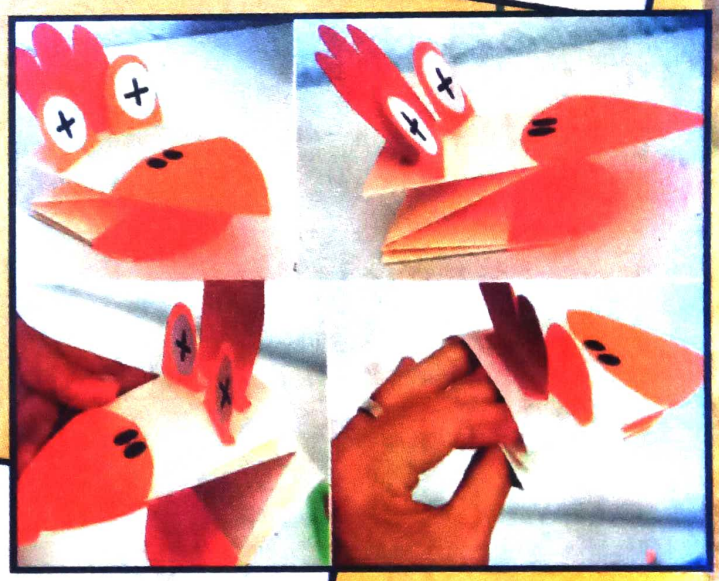

माथापच्ची

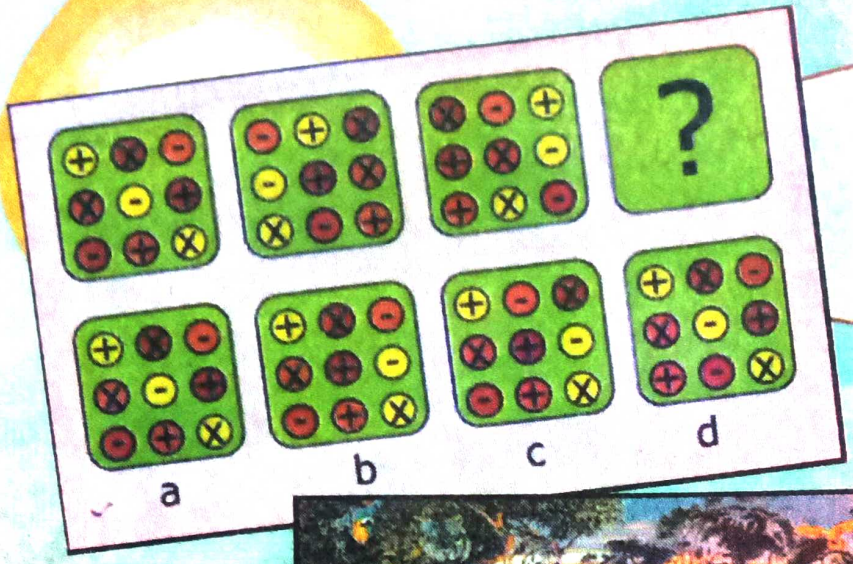

A. खाली बॉक्स में सही टुकड़ा जोड़ो।

B. इस चित्र में कुल कितने बाघ दिखाई दे रहे हैं।

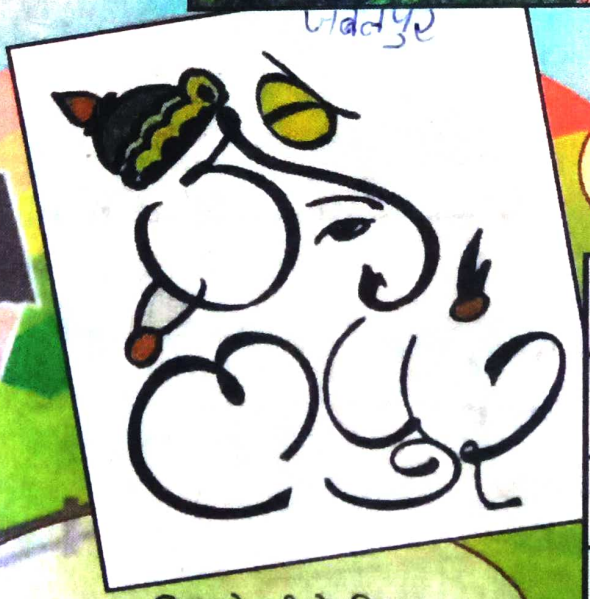

C. गणेशजी के चित्र में कौनसे शहर का नाम छिपा है?

D. खाली बॉक्स में संख्या भरो।

9	+	3	=	12
+		−		+
6	−		=	4
=		=		=
15	+	1	=	16

E. हाथियों की सूंड एक-दूसरे में उलझ गई है। देखिए किसकी सूंड किसके साथ है?

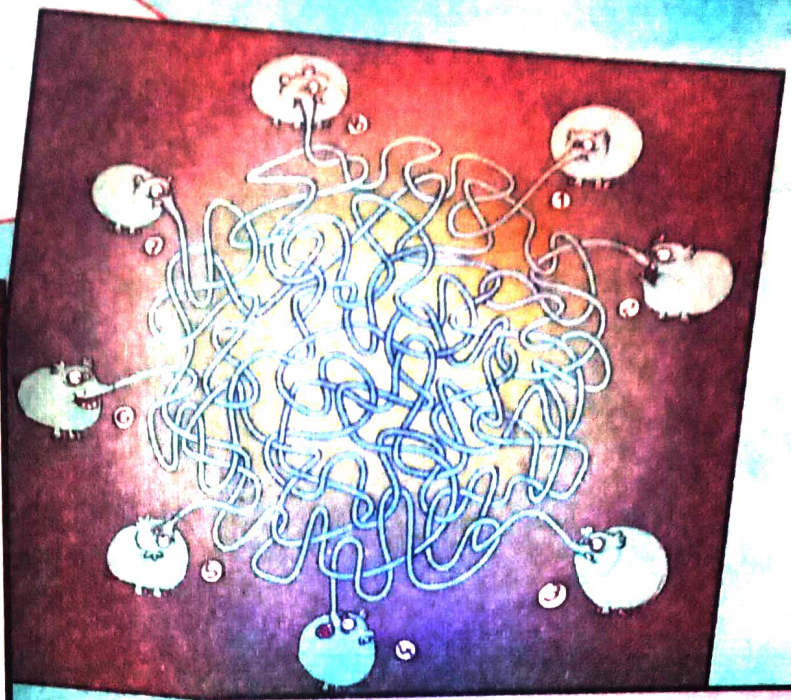

111 = 13
112 = 24
113 = 35
114 = 46
115 = 57
117 = ??

F. प्रश्नवाचक चिह्न की जगह क्या आएगा?

G. खाली बॉक्स में जानवरों के नाम लिखिए। लाल लाइन वाले चौखानों में कौनसी स्पेलिंग बनती है।

H. किसकी प्लेट में क्या है?

उत्तर

A.= A
B.= 14
C.= जबलपुर
E.= 1-5, 2-8, 3-7, 4-6
F.= 7
H.= 1-मशरूम, 2-फ्रेंचफ्राय, 3-पिज्जा, 4- गाजर, 5-तरबूज, 6- पेस्ट्री, 7- चीज

G.

1. Cat 2. Cow 3. Duck 4. Chicken
5. Goat 6. Rooster 7. Turkey 8. Horse
9. Pig 10. Dog 11. Sheep

Answer: COUNTRYSIDE

D.

9	+	3	=	12
+		−		+
6	−	2	=	4
=		=		=
15	+	1	=	16

B.

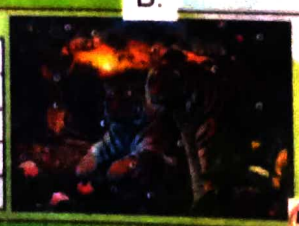

सोनम कुमारी
उम्र- 12 वर्ष
स्थान-बरियारपुर पूर्वी (बिहार)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

प्रिंस राज
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-खरीदी विगह, नवादा
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

फजल इलाही
उम्र- 12 वर्ष
स्थान-रामनगर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, कम्प्यूटिंग।

तनु राम
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-बामठोर (राज.)
रुचि-पढ़ना, कम्प्यूटिंग।

करनजीत
उम्र- 6 वर्ष
स्थान-करेली (म.प्र.)
रुचि-खेलना, टी.वी.।

चंचल तौंदवाल
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-कंवरपुरा, कोटपूतली (राज.)
रुचि-पढ़ना, ड्रॉइंग।

गोगा राम बेनिवाल
उम्र-14 वर्ष
स्थान-मेतराड़ (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

वंशिका शर्मा
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-शेरपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

इरफान खान
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-सेड़वा (राज.)
रुचि-पढ़ना, कम्प्यूटिंग।

सत्यम शर्मा
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-सवाई माधोपुर (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

दीप्ति तौंदवाल
उम्र- 6 वर्ष
स्थान-कंवरपुरा, कोटपूतली (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

आराध्या त्रिवेदी
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-सवाईमाधोपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

कमलनीत कौर छाबड़ा
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-करेली (म.प्र.)
रुचि-पढ़ना, ड्रॉइंग।

मो. अरबाज हक
उम्र- 8 वर्ष
स्थान-गोगरी (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

हिमांशु शर्मा
उम्र- 13 वर्ष
स्थान- सवाईमाधोपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

आदित्य जैन
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-अचनारा, प्रतापगढ़ (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

किड्स क्लब में भाग लेने के लिए बच्चे अपना नाम, उम्र, पता, रुचि

साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें। साथ ही फोटो के पीछे भी अपना नाम अवश्य लिखें।

1. आसमान में चिड़िया कम हैं।
2. पानी में मछली है।
3. लड़के ने कैप पहन रखी है।
4. नाव पर नाम लिखा है।
5. कछुए के खोल का डिजाइन अलग है।
6. लड़की के पीछे चिड़िया बैठी है।
7. कछुए के आगे घास नहीं है।
8. किनारे पर छोटे पत्थर पड़े हैं।
9. लड़की के शर्ट में डिजाइन नहीं है।
10. नाव में सामान पड़ा है।
11. लड़के की शर्ट पर डिजाइन है।
12. बादल का टुकड़ा बड़ा है।
13. लड़के ने कान में बाली पहनी है।
14. लड़की की चोटी में फूल है।
15. लड़का टेंशन में है।

उत्तर

1. लड़की की चोटी अलग है।
2. बिल्ली में डिजाइन नहीं है।
3. नीचे रखी बास्केट में सामान कम है।
4. घोड़ा साफ करने का ब्रश नहीं है।
5. घोड़े की जीन में पैर पैर रखने का नहीं है।
6. घोड़े के गले में रस्सी नहीं है।
7. घोड़े के मुंह पर बांधने वाली रस्सी का डिजाइन अलग है।
8. पीछे खूंटी पर एक जीन टंगी है।
9. घोड़े के पैरों में पट्टी बंधी है।
10. लड़की ने कैप लगा रखी है।
11. सफाई करने वाला पंजा अलग है।
12. पीछे खड़े घोड़े का मुंह खुला हुआ है।
13. बोर्ड पर स्पार्की की जगह स्पार्कल लिखा है।
14. लड़की ने पैरों में जूते पहने हैं।
15. घोड़े के बाल कम हैं।

उत्तर

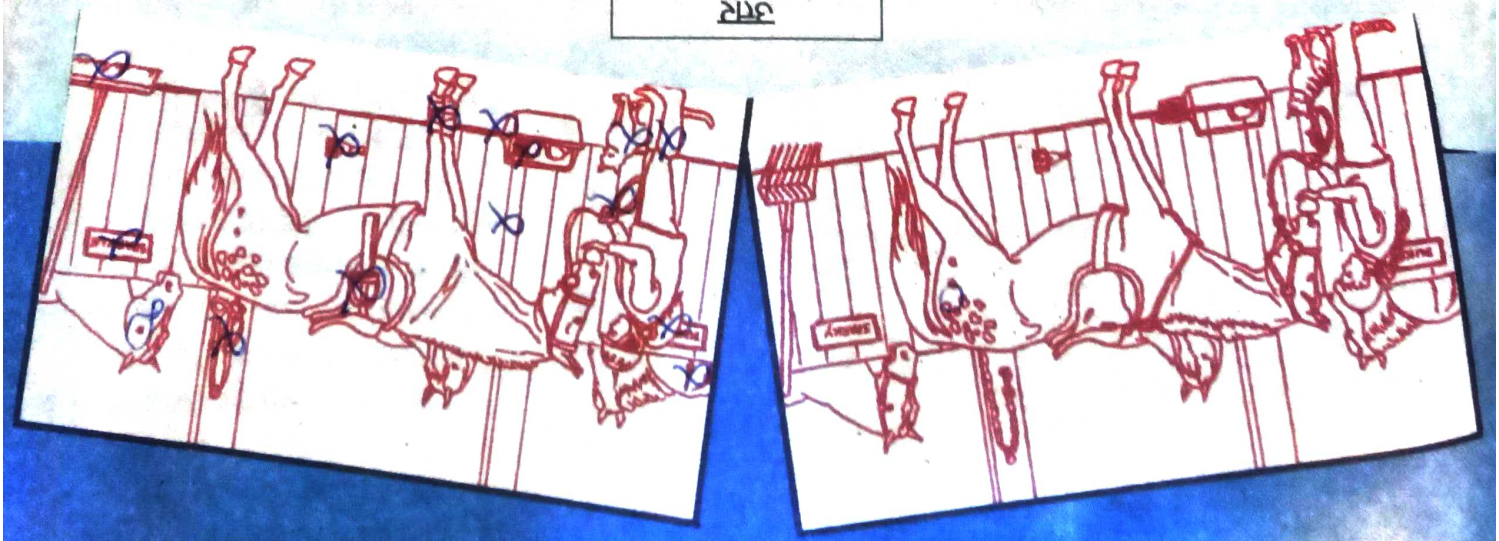

अंतर बताओ

तंजानियाज बेस्ट केप्ट सीक्रेट

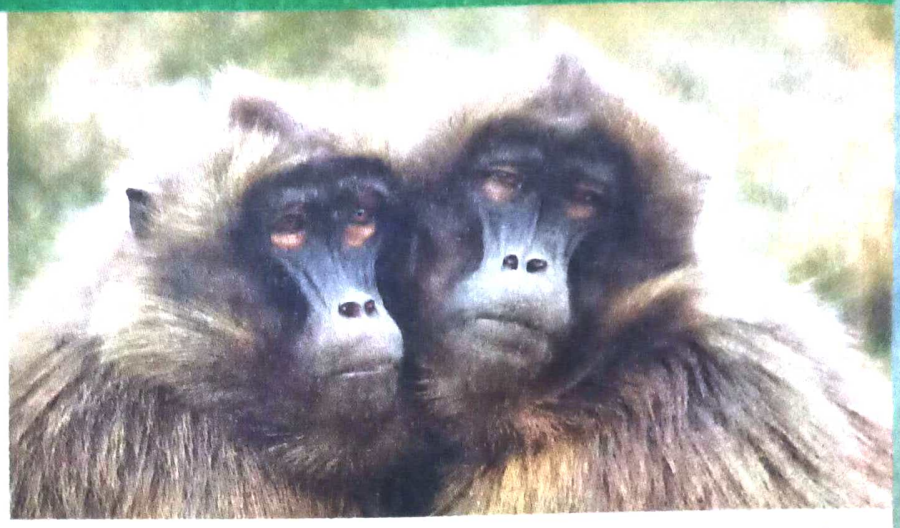

तंजानिया में उत्तर की ओर यात्रा करने पर सेरेंगेती मैदान और नगोरोंगोरो क्रेटर की छाया में छिपे कम ज्ञात तरंगायर नेशनल पार्क (Tarangire National Park) स्थित है। तरंगायर नेशनल पार्क के बीच से होकर एक नदी गुजरती है, जो वहां के निवासियों को सालों से लाभान्वित करती आ रही है। हालांकि शुष्क मौसम में जब नदी में पानी का प्रवाह कम हो जाता है, तब यह उद्यान अपने विशेष रूप में नजर आता है। इस दौरान तरंगायर के वन्यजीवन के वास्तविक प्रकृति का प्रदर्शन होता है।

यह नदी उद्यान और उसके आसपास के इलाकों की जीवन रेखा है। सवाना के मैदान में बल खाती दक्षिण से उत्तर की ओर बहने वाली इस नदी के नाम पर ही राष्ट्रीय उद्यान का नाम तरंगायर नेशनल पार्क पड़ा। यह उद्यान सेरेंगेती के दक्षिण-पूर्व में फैला हुआ है, जो अविरल पानी की भूमि के नाम से जाना जाता है। यह उद्यान यहां रहने वाले लंगूरों के झुंडों के लिए भी प्रसिद्ध है, जो हर रात नदी के किनारे पाम के जरिये अपना रास्ता बनाते हैं।

तरंगायर लंगूरों का प्रमुख क्षेत्र है। यहां पूरे अफ्रीका में कुछ सबसे बड़े लंगूरों का झुंड पाया जाता है। लंगूरों की तरह ही यहां हाथी भी सालों वास करते हैं। असाधारण दिनों में आप 300 तक हाथियों के झुंड को देख सकते हैं। सवाना में पाए जाने वाले हाथी अन्य वनों के हाथियों के मुकाबले बड़े होते हैं, और उनके दांत ज्यादा बड़े और अधिक घुमावदार होते हैं। यह उद्यान पक्षियों को देखने वालों के लिए भी स्वर्ग है। यहां पक्षियों की करीब 550 प्रजातियां पायी जाती हैं। शुष्क मौसम के दौरान हाथियों के साथ इस अमूल्य नदी के इर्द-गिर्द जेबरा और जंगली हिरणों के बड़े झुंड को भी देखा जा सकता है।

यहां वनस्पति के एक खास सदस्य पाए जाते हैं, जो तरंगायर को प्रसिद्ध बनाता है, वो है- बाओबाब का पेड़। विशालकाय बाओबाब पेड़ अफ्रीकी महाद्वीप की खास पहचान है और अफ्रीका के कई पारंपरिक उपचारों और लोककथाओं में इसका उल्लेख है। बाओबाब पेड़ अफ्रीका के 32 देशों में पाए जाते हैं। ये पांच हजार वर्ष तक जिंदा रह सकते हैं। इसकी ऊंचाई 30 मीटर तथा इसके विस्तार की परिधि 50 मीटर तक हो सकती है। बाओबाब का पेड़ जानवरों, मनुष्यों को आश्रय, भोजन और पानी प्रदान कर सकता है। यही वजह है कि सवाना के कई समुदाय बाओबाब पेड़ के समीप अपना घर बनाते हैं।

अफ्रीका की महान दरार घाटी में सवाना चारों ओर तेजस्वी ज्वालामुखी की प्रचंड श्रृंखला है। तंजानिया के उत्तर की ओर आगे यात्रा करने पर आप दुर्लभ जंगली हाथियों के परिवार को अफ्रीका के प्रतिष्ठित ज्वालामुखी पर्वत माउंट किलिमंजारो की ढलान के सहारे जंगल में प्रवेश करते देख सकते हैं। पास के आरूशा राष्ट्रीय उद्यान में राजहंसों से भरी क्षारीय झीलें हैं, और वहां के पेड़ नीले बंदरों व काले तथा सफेद कोलोबस बंदरों का बसेरा है।

इन सबसे ज्यादा प्रसिद्ध यहां दुनिया का सबसे लंबा और अफ्रीका का प्रतिष्ठित ज्वालामुखी है, जिसे ग्रेट व्हाइट माउंटेन किलिमंजारो कहा जाता है। किलिमंजारो का क्रेटर करीब आधे किलोमीटर तक फैला है, जो अब ठोस बर्फ से बंद है। इस पर यकीन करना मुश्किल होता है कि कभी यह जलता हुआ लावा उगला करता था।

किलिमंजारो काफी बड़ा है, इसलिए इसके मौसम का मिजाज भी अपना ही है। जब समुद्र से चलने वाली हवा पहाड़ के शिखर पर बादलों तक पहुंचती है, तो उससे चोटी पर नमी जमा हो जाती है। यहां से नमी सुराखदार लावा चट्टानों से छनकर रिसते हुए भूमिगत जल में तब तक समोती रहती है जब तक कि वहां दलदल न हो जाए, नीचे से झरना न बहने लगे।

मौसम में अचानक बदलाव से यह बादलों से ढक जाता है और तेज हवाएं 30 मिनट के अंदर यहां का तापमान 20 डिग्री तक नीचे गिरा देते हैं। चार हजार मीटर की ऊंचाई पर विचित्र से दिखने वाले विशालकाय लोबिलिया यहां पायी जाने वाली कुछ वनस्पतियों में से एक है, जिसने मौसम में इस तरह के बदलावों को सहने के

अनुकूल खुद को ढाल लिया है। ये पौधे परागण के लिए पक्षियों पर निर्भर हैं। माउंट किलिमंजारो के समीप छोटा, लेकिन खूबसूरत आरूशा राष्ट्रीय उद्यान है। इस उद्यान में जिराफ आपका स्वागत करते नजर आएंगे। आरूशा के खूबसूरत प्राणियों में काले और सफेद कोलोबस बंदर को अफ्रीका के सभी बंदरों की तुलना में कहीं अधिक वनस्पतियों से लगाव है। उसने शायद ही कभी पेड़ों से नीचे उतरकर जंगल की धरती पर कदम रखा हो।

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **कौन सा पेड़ अफ्रीकी महाद्वीप की पहचान है?**

(A) बैंबू (B) लोबेलिया
(C) बनयान (D) बाओबाब

Name.....

Father's Name: .....

Address.....

City.....Pin..... State.....

Phone.....

Date of birth...../...../.....

Email id.....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest
P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

तंजानिया के शानदार जंगली जीवों के बारे में और ज्यादा जानकारी के लिए देखें, एनिमल प्लेनेट की नई श्रृंखला 'तंजानियाज बेस्ट केप्ट सीक्रेट,' सोमवार से शुक्रवार को रात 9 बजे।

पिछली क्विज में पूछे गये सवाल-'व्हेल जो आवाजें निकालती हैं, उसका मकसद इनमें से क्या नहीं है,' का सही जवाब है- सूंघना।

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी कम्यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम दिसम्बर द्वितीय, 2016

1. **श्रद्धा शर्मा**, प्रयाग, इलाहाबाद (उ.प्र.)
2. **सक्षम बंटी**, गाजियाबाद (उ.प्र.)
3. **भावना पान्डेय**, नई दिल्ली
4. **साक्षी शर्मा**, हसामपुर, सीकर (राज.)
5. **सौरभ ओझा**, बीकानेर (राज.)
6. **रिद्धि उपाध्याय**, कोटा (राज.)
7. **रुद्रप्रिया**, जोगसर, भागलपुर (बिहार)
8. **युसुफ रहमान**, अमीनाबाद, लखनऊ (उ.प्र.)
9. **प्राची पोरवाल**, जयपुर (राज.)
10. **कुमुद प्रिया**, खगौल, पटना (बिहार)

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

सराहनीय प्रयास

1. **रजत सक्सेना**, मंडीदीप (म.प्र.)
2. **शुभम् श्री**, पटना (बिहार)
3. **रोशनी यादव**, भोपाल (म.प्र.)
4. **दीप्ति तौंदवाल**, कंवरपुरा (राज.)
5. **निधि शुक्ला**, इलाहाबाद (उ.प्र.)
6. **खुशी गुप्ता**, लखनऊ (उ.प्र.)
7. **निष्ठा सैनी**, अलवर (राज.)
8. **श्रेणीक राजेन्द्र छाजेड़**, भुसावल (महाराष्ट्र)
9. **राशि शर्मा**, कानपुर (उ.प्र.)
10. **अमन कुमार यादव**, रानीपुर (बिहार)
11. **अश्वनी सामरिया**, भांडारेज (राज.)
12. **हब्शी जुबेर खां**, जालौर (राज.)
13. **गुंजन अग्रवाल**,कुचामन सिटी (राज.)
14. **सुरभि जायसवाल**, बदनी (उ.प्र.)
15. **जगदीश राजपुरोहित**, आदर्श, सिरोही (राज.)

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

विशेष: कृपया अपना पता पूरा लिखें। पिनकोड नंबर अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।

ज्ञान प्रतियोगिता-412 का परिणाम

1. **अभिषेक कुमार**, लोदीपुर धीर, समस्तीपुर (बिहार)
2. **रिमझिम केसरवानी**, भखारी, कौशाम्बी (उ.प्र.)
3. **ऋतु राज**, किउल आरएस, लखीसराय (बिहार)
4. **सुरजीत कुमार राय**, फारबिसगंज, अररिया (बिहार)
5. **हेमलता कोठारी**, उदयपुर (राज.)
6. **ममता शर्मा**, कांवट, सीकर (राज.)
7. **शैलेन्द्र सिंह चौहान**, छोटी कसरवाद, खरगोन (म.प्र.)
8. **महेन्द्र सिंह**, खोखसर, बाड़मेर (राज.)
9. **आर्यन जगदाले**, उज्जैन (म.प्र.)
10. **शिवम चौहान**, उज्जैन (म.प्र.)

ज्ञान प्रतियोगिता-412 का सही हल

मनमोहन सिंह, रघुराम राजन, उर्जित पटेल

1. श्रीलंका
2. डोनाल्ड ट्रंप
3. जापान
4. नेपाल
5. 500-1000

415 ज्ञान प्रतियोगिता

परखो ज्ञान, पाओ इनाम

KNOWLEDGE IS POWER

1. .....

2. .....

3. .....

1

इन फूलों को पहचानिये।

2

3

1. जॉन लॉगी बेयर्ड का संबंध किससे है?
(अ) रेडियो
(ब) टेलीविजन
(स) केबल

2. काबुल किस देश की राजधानी है?
(अ) पाकिस्तान
(ब) कजाकिस्तान
(स) अफगानिस्तान

3. चेस बोर्ड में कितने खाने दिये हुए होते हैं?
(अ) 62
(ब) 63
(स) 64

4. हल्दीघाटी का संबंध किस प्रदेश में है ?
(अ) हरियाणा
(ब) महाराष्ट्र
(स) राजस्थान

5. रसदार फलों में अधिक मात्रा में कौनसा विटामिन पाया जाता है?
(अ) विटामिन ए
(ब) विटामिन बी
(स) विटामिन सी

ज्ञान प्रतियोगिता- 415

नाम.....

पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....

राज्य.....पिनकोड.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता: बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

विशेष: कृपया अपना पता पूरा लिखें। पिनकोड नंबर अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 10 फरवरी, 2017 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 14 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। पते में पिनकोड अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

पिनकोड.....

दूंढो तो...

उपर दी गई चीजों को नीचे चित्र में ढूंढना हैं। फिर इसमें प्यारे-प्यारे रंग भर दो तो कैसा रहेगा!

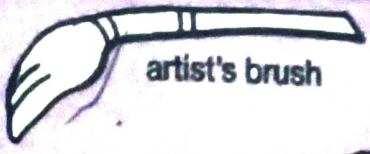

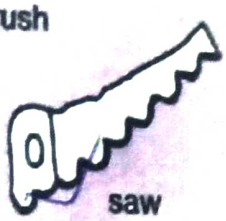

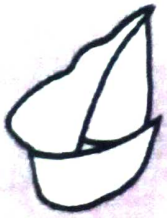

महाभारत 52

प्रस्तुतिः कुमार मोहनचलम

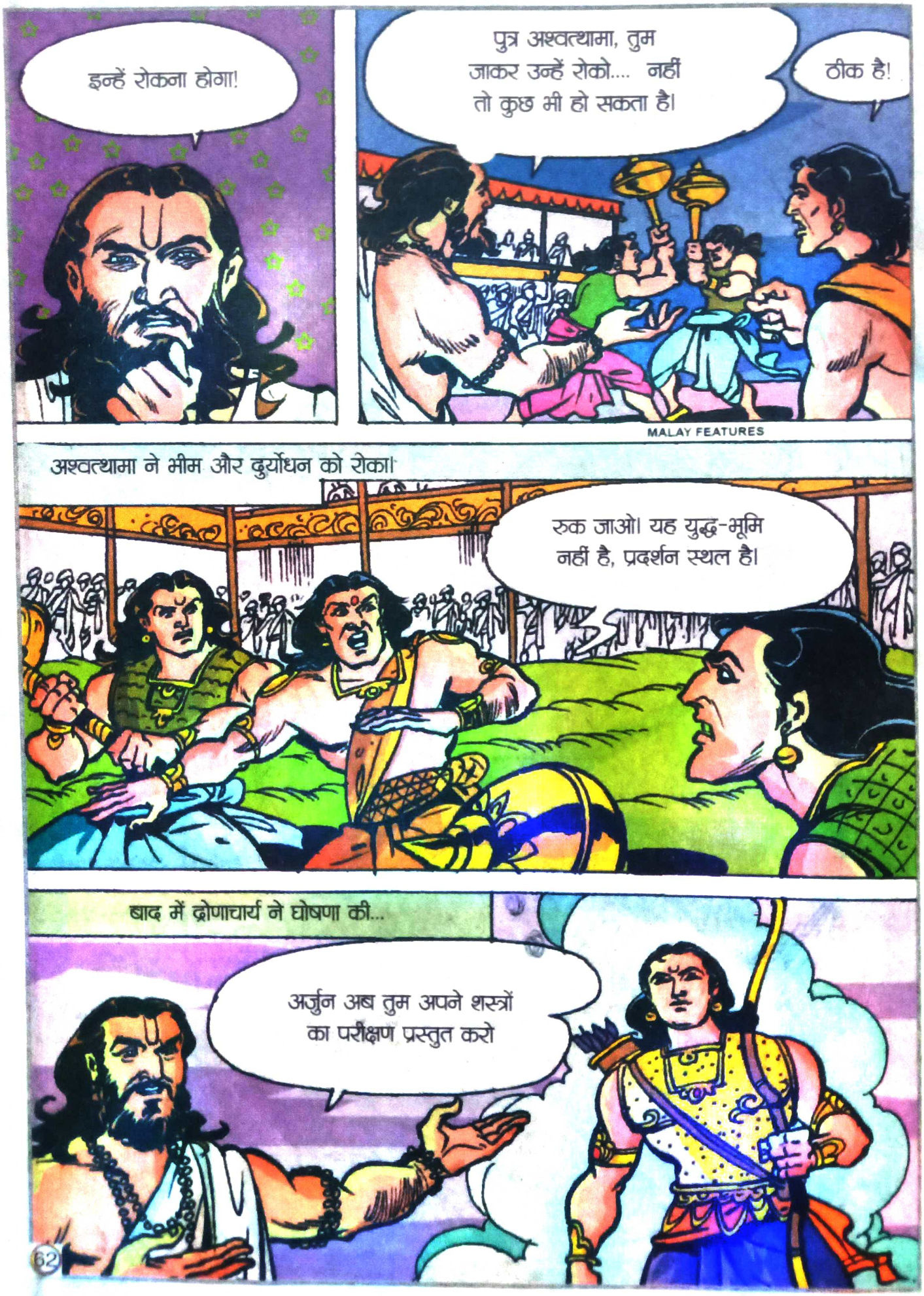

अर्जुन की धनुर्विद्या देख सभी चकित रह गये।
अरे! अद्भुत!
अति उत्तम!
विदुर यह कैसी आह्लादकारी ध्वनियां हैं...!
महाराज, अर्जुन प्रदर्शन कर रहे हैं।
कुन्ती कितनी भाग्यशाली हैं... उनके सभी पुत्र महावीर हैं....
अर्जुन ने आग्नेयास्त्र से अग्नि उत्पन्न कर दी...

वरुणास्त्र से जलधारा निकाली और भौमास्त्र से भूमि के अंदर प्रवेश कर दिखाया...

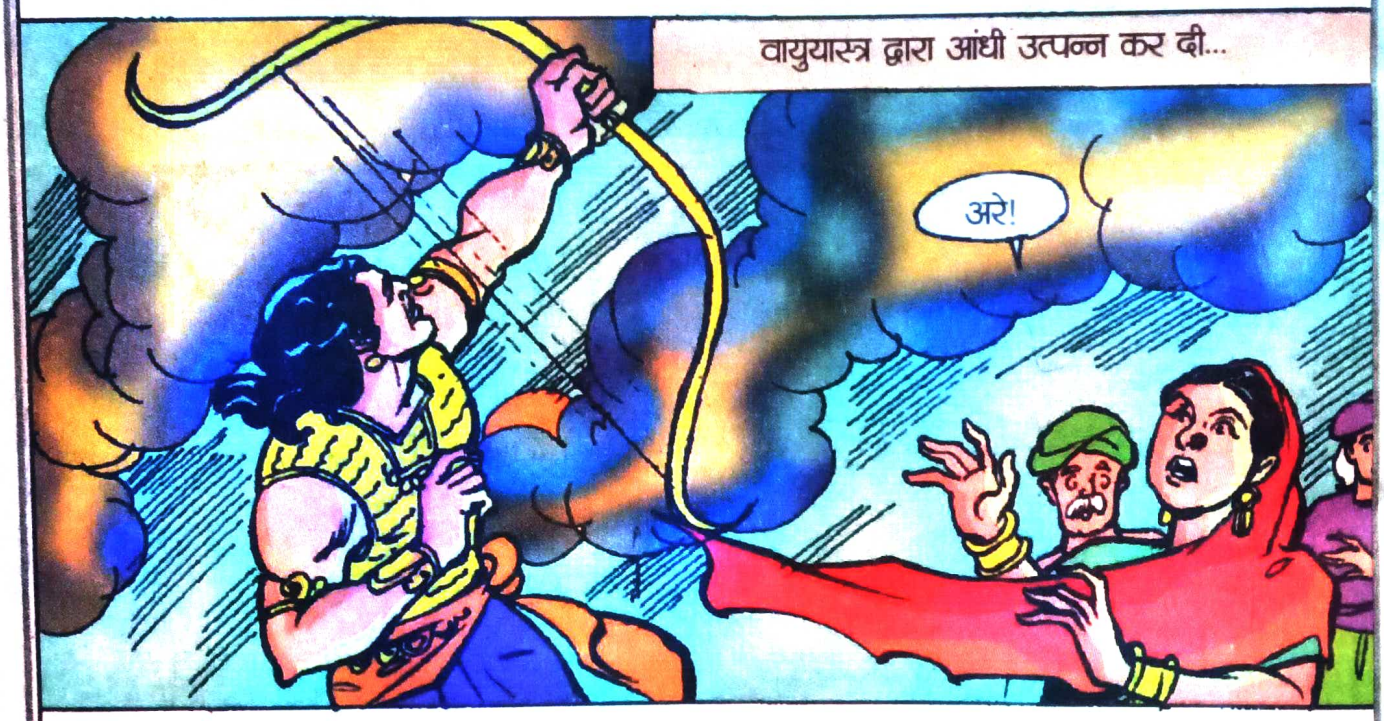
वायुयास्त्र द्वारा आंधी उत्पन्न कर दी...
अरे!

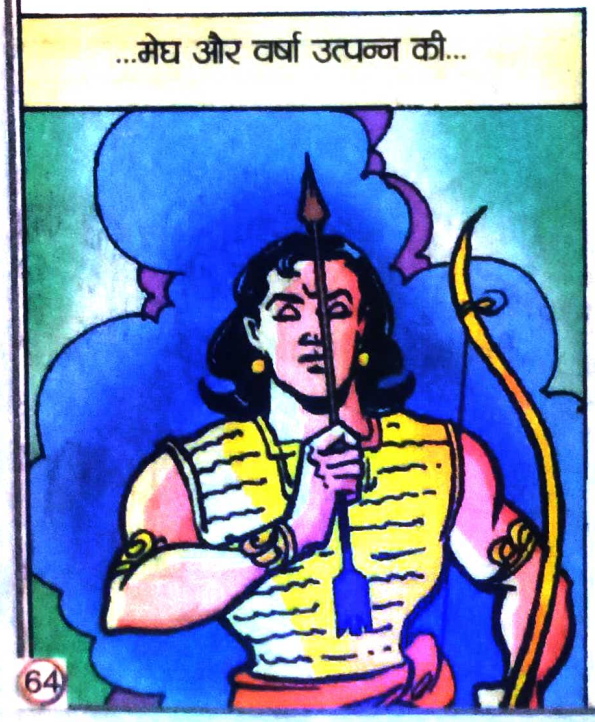
...मेघ और वर्षा उत्पन्न की...

बाद में अर्जुन ने अदृश्य होने का प्रदर्शन किया।

अर्जुन ने विशाल आकार ले लिया और अपनी धनुर्विद्या का अद्भुत प्रदर्शन किया।
देखो, अर्जुन का रथ-चालन!
ओह! अद्भुत गति!

(अगले अंक में जारी)

जनवरी प्रथम, 2017

मैं बालहंस का नियमित पाठक हूं। इससे हमें बहुत सारा ज्ञान मिलता है। मेरे माता-पिता, भाई-बहन, दोस्त बालहंस को बड़े चाव से पढ़ते हैं। तथ्य निराले, कहानियां, गुदगुदी, नॉलेज बैंक, सामान्य ज्ञान, महाभारत बहुत रोचक लगते हैं। इस अंक में चित्रकथा सागर में सिक्के, लालच ने भगाई भूख रोचक लगीं। भारतीय सेना के युद्ध घोष, यह है पंचतंत्र का तंत्र, समोसा, रस लीजिए छप्पन भोग का आदि लेख ज्ञानवर्द्धक थे।

–गोगाराम बेनिवाल, नेतराड़, बाड़मेर

बालहंस बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए भी ज्ञानवर्द्धक है। मैं इसे लम्बे समय से पढ़ता आ रहा हूं। इसकी कहानियां, कविताएं और चित्रकथाएं बहुत मजेदार और शिक्षा देने वाली होती हैं। मेरे पोते-पोतियां इसे बहुत पसंद करते हैं। बालहंस की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

–धनपत राय मलिक,
रोहतक (हरियाणा)

लेखकों से

लेखक अपनी रचनाएं भेजते समय कृपया निम्न जानकारी अंग्रेजी में अवश्य भेजें। पारिश्रमिक का भुगतान अब ऑनलाइन किया जायेगा।

1. Name and Complete Address with pincode
2. Bank Account Name
3. Bank Name and Branch
4. Bank Account Number
5. IFSC Code
6. Moblie No.
7. email address

I have been reading Balhans for many years. It is my favourite magazine. Balhans is very interesting, knowledgeable, entertaining magazine. I like puzzles, art and craft, knowledge bank and jokes very much.

-**Kamalneet,** Kareli (M.P.)

सबसक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (600/-रुपए)..... वार्षिक (300/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (150/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से बालहंस, जयपुर के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया संपर्क करें।
फोन नं. 0141-3327700 Ext. 50352, 50358

राशि इस पते पर भेजें-
बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

खोदा पहाड़, निकला बंदर

वो बच गयी, ये फंस गयी

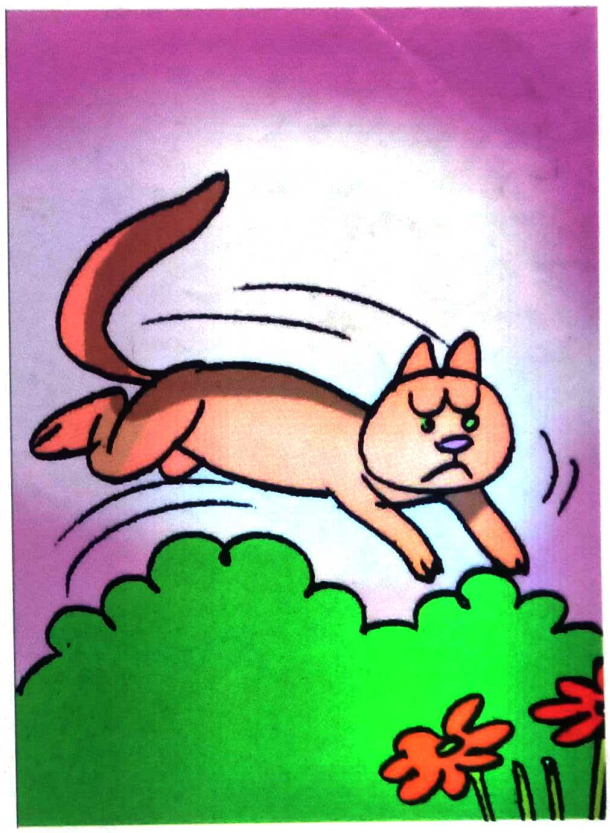

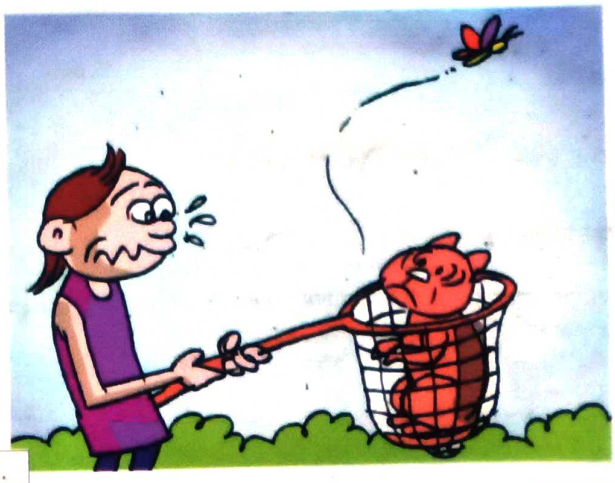

J.B.C.

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

बात फूलों की

- अकेले फूल को कई कांटों से ईर्ष्या करने की जरूरत नहीं होती।
- पंखुड़ियां तोड़ कर आप फूल की खूबसूरती नहीं इकट्ठा करते।
- पृथ्वी फूलों में हंसती है।
- फूल सबसे प्यारी चीज है, जिसे भगवान ने बनाया, पर उसमें आत्मा डालना भूल गए।
- हम एक फूल से यह सीख सकते हैं कि कैसे हम अपने आप को न्यौछावर करके और बिना स्वार्थ के दूसरों की खुशियों में और वृद्धि कर सकते हैं।
- यह कहने के बजाय कि ईश्वर ने फूलों के साथ कांटे बनाये, हमें ईश्वर को धन्यवाद कहना चाहिए कि उन्होंने कांटों के साथ फूल भी बनाये।
- फूल प्रेम की सर्वाधिक सच्ची भाषा है।
- दुख में हों या सुख में, फूल हमारे सच्चे दोस्त बने रहते हैं।
- आपका दिमाग एक बगीचा है, और आपके विचार बीज हैं। आप चाहें तो खुशियों के फूल उगाएं या दुख के कांटे।